दसवीं झलक

भारत में महात्मा गांधी और स्वातंत्र्य आंदोलन

XUXU8Q

गांधी जी के गुरु गोखले जी इंग्लैंड से भारत लौट आए थे और पूना में बीमार रहने लगे थे। परन्तु ज्यों ही उन्हें पता चला कि गांधी जी का जहाज मुंबई (बंबई) के बंदरगाह की ओर आ रहा है, त्यों ही वे मुंबई (बंबई) की ओर दौड़े और उनके स्वागत की तैयारी में लग गये।

9 जनवरी 1915 को गांधी जी का जहाज बंदरगाह पर लगा। जनता की भीड़ उनके दर्शन के लिए टूट पड़ी। उसने 'महात्मा गांधी की जय' से आकाश गुँजा दिया। उसने देखा कि धोती, दुपट्टे, अँगरखे और कठियावाड़ी पोशाक में ठिंगना,साँवला–सा आदमी, नंगे पैरों अपोलो बंदरगाह पर उतर रहा है। यही उसका महात्मा गांधी था। अपोलो बंदरगाह पर वायसराय और विशिष्ट व्यक्ति, जिन्हें आजकल वी. आई. पी. कहा जाता है, उतरने दिए जाते थे। गांधी जी को भी सरकार ने विशिष्ट व्यक्ति समझकर वहाँ उतरने की अनुमति दे दी थी ।

गोखले अपने शिष्य को भीड़ से बड़ी कठिनाई से बाहर ला सके। गांधी जी की पत्नी कस्तूरबा सफेद धोती और ब्लाउज पहने उन्हीं के साथ नंगे पैर चल रही थीं। जनता बैरिस्टर गांधी की सादगी पर मुग्ध हो रही थी। उसके स्वागत –सत्कार को नम्रतापूर्वक स्वीकार कर गांधी जी अपने गुरु के साथ पूना गए और कुछ समय तक उनके साथ रहे। गुरुजी ने उन्हें एक वर्ष तक देश में भ्रमण करने की सलाह दी। वे चाहते थे कि गांधी जी अपनी आँखों से देशवासियों की दशा देखें और तब उनकी भलाई और अधिकारों के समुचित उपाय पर विचार करें। गांधी जी ने उनकी आज्ञा शिरोधार्य की। वे सबसे पहले मुम्बई(बम्बई) के गवर्नर विलिंग्डन से मिले। गवर्नर ने उनसे कहा–"जब आए गवर्नमेंट के खिलाफ कोई काम शुरू करो, तो मुझे उसकी पूर्व सूचना देना न भूलना।" "लार्ड साहब, मैं तो छिपकर कोई काम करता ही नहीं। मैं कार्यारंभ के पूर्व आपको अवश्य सूचना दूँगा, जिससे आप जनता की शिकायतों को जान सकें और उन्हें दूर कर सकें।"

देश–भ्रमण के पूर्व गांधी जी अपने रिश्तेदारों से मिलने राजकोट और पोरबंदर जाने के लिए रेल से रवाना हुए। मार्ग में एक स्टेशन पर एक कार्यकर्ता उनसे मिला और वीरमगाम के किसानों पर लगने वाले टैक्स (जकात) की ज्यादती की शिकायत करने लगा। गांधी जी को उस समय ज्वर था। उन्होंने उससे इतना ही पूछा–"क्या आप लोग जेल जाने को तैयार हैं?" कार्यकर्ता ने बड़े उत्साह से 'हाँ' कहा। "तो मैं जरूर इस बात की जाँच करूँगा। यदि शिकायत सच निकली, तो मैं उसे दूर कराने की कोशिश करूँगा।" कहकर गांधी जी ने कार्यकर्ता को आश्वस्त किया।

कठियावाड़ (सौराष्ट्र) में जहाँ–जहाँ गांधीजी गए, लोगों ने वीरमगाम के टैक्स की

शिकायत की। 'रामकाज कीन्हे बिना मोहिं कहाँ विश्राम' की बात चरितार्थ हुई। आए तो थे परिवार के बीच कुछ समय बिताने और विश्राम करने, पर जनता ने उन्हें विश्राम नहीं करने दिया। उन्होंने जनता की शिकायतों के प्रमाण एकत्र किए और उन्हें गवर्नर के पास भेजकर किसानों को राहत पहुँचाने की प्रार्थना की।

गवर्नर ने जब ध्यान नहीं दिया तब उन्होंने वाइसराय के दरवाजे खटखटाए। वाइसराय ने शिकायतों को सच पाया और टैक्स रद्द कर दिया। भारत में गांधी जी की यह प्रथम सफल जन सेवा थी।

अब गांधी जी ने देश भ्रमण प्रारंभ किया। रेल के तीसरे दर्जे में मामूली मुसाफिर की तरह उन्होंने यात्रा की। सफेद धोती, सफेद कुर्ता और सादी कश्मीरी टोपी उनकी वेश–भूषा थी। उन्होंने रंगून, कोलकाता (कलकत्ता) आदि स्थानों की यात्रा की। कोलकाता में उन्होंने विद्यार्थियों के बीच बोलते हुए कहा–"तुम्हें धार्मिक और सदाचारी बनना चाहिए। छिपकर कोई काम मत करो। जो काम करो, खुलकर करो।" कुंभ के मेले के अवसर पर हरिद्वार गए। वहाँ की गंदगी देखकर बड़े दुखी हुए। कुंभ के मेले में उन्होंने फिनिक्स आश्रम के नवयुवकों को सेवाकार्य में लगा दिया। ऋषिकेश में एक साधु मिले। उन्होंने उनकी सेवा की बड़ी प्रशंसा की और अंत में कहा, "आप अपने आपको हिन्दू कहते हैं फिर आपने चोटी और जनेऊ क्यों उतार दिए। ये तो हिन्दू धर्म की निशानी हैं।" गांधी जी ने उत्तर दिया– "मैं चोटी तो रख सकता हूँ, पर जनेऊ नहीं पहनूँगा क्योंकि देश में बहुत–से लोग जनेऊ न पहनकर भी हिन्दू बने हुए हैं।"

पूर्व और उत्तर भारत की यात्रा के पश्चात् गांधी जी ने दक्षिण की यात्रा की। मदुरै (मदुरा) में जनता ने उनका भव्य स्वागत किया। एक स्थान पर बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर उन्होंने पीड़ितों की दुर्दशा पर दुख प्रकट किया। उन्होंने कहा ''हिन्दू धर्म में अछूतों का तिरस्कार करने की बात नहीं है, उनके साथ धर्म अन्याय नहीं कर रहा है। उसके अनुयायी कर रहे हैं।'' उन्होंने अछूतों को सफाई से रहने और जूठा अन्न न खाने की सलाह दी। दूसरी सभा में उन्होंने देशी भाषाओं के प्रयोग की बात पर जोर दिया। उन्होंने कहा–"अँग्रेजी भाषा अच्छी है, परन्तु इसीलिए हमें अपनी देशी भाषाओं का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। हमें मातृभाषा से प्रेम करना चाहिए। वे अपने भाषणों में चर्खे से सूत कातने और कपड़ा बुनने की चर्चा भी करते थे।

जब गांधी जी ने संपूर्ण देश की यात्रा कर ली, तब वे किसी स्थान पर अपने अफ्रीका के साथियों को लेकर बैठना चाहते थे और उसे अपने कार्यक्रमों का केन्द्र बनाना चाहते थे। उन्हें कई स्थान सुझाए गए परन्तु उन्होंने अहमदाबाद को ही चुना ।

साबरमती का सत्याग्रह आश्रम

गांधी जी में प्रकृति का आकर्षण प्रबल था। वे जनरव से दूर अपना आश्रम बनाना चाहते थे। अहमदाबाद के पास साबरमती नदी बहती है। उसी के किनारे 15 मई 1915 को महात्मा जी ने आश्रम की स्थापना की। उन्होंने उसका नाम सत्याग्रह आश्रम रखा, पर जनता

साबरमती आश्रम

उसे साबरमती आश्रम कहती है। सत्य,अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह सहित स्वदेशी

व्रत का जीवन आश्रमवासियों को बिताना था। आश्रम में पहले उनके अफ्रीका के थोड़े साथी सम्मिलित हुए। फिर धीरे–धीरे आश्रमवासियों की संख्या बढ़ती गई।

आश्रमवासियों को सादे वस्त्र और भोजन से संतोष करना पड़ता था। भोजन के पदार्थों में मिर्च–मसाले नहीं डाले जाते थे, दूध बहुत कम दिया जाता, परन्तु फल और मेवे अधिक दिए जाते थे ।

आश्रमवासियों को छुट्टियाँ नहीं दी जाती थीं। उन्हें अपने हाथ से ही सारा काम करना पड़ता था। उनसे किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं ली जाती थी। जो अतिथि आते थें, उन्हें भी आश्रम के नियमों का पालन करना होता था।

आश्रम में हरिजन परिवार का प्रवेश

आश्रम की स्थापना के कुछ समय बाद गांधी जी को हरिजनों का कार्य करने वाले ठक्कर बापा की एक चिट्ठी मिली जिसमें उन्होंने आश्रम में एक हरिजन परिवार को रखने की सिफारिश की थी और पूछा था कि क्या उसे शीघ्र भेजा जा सकता है। गांधी जी धर्मसंकट में पड़ गए, इसलिए नहीं कि उन्हें आपत्ति थी, वरन् इसलिए कि आश्रम के कुछ लोगों को बहुत आपत्ति थी। फिर भी गांधी जी ने अछूत परिवार को आश्रम में बुला लिया। आश्रमवासी तो गांधी जी की इच्छा का बहुत समय तक विरोध नहीं कर सके, परन्तु विरोध घर में ही बहुत दिनों तक जारी रहा। उनकी पत्नी कस्तूर बा अछूतों के प्रवेश से उन पर बहुत झल्लाईं, बहुत बिगड़ीं। गांधी जी अपने सिद्धांत से डिगने वाले प्राणी नहीं थे। उन्होंने दृढ़ता पूर्वक अपनी पत्नी से कह दिया, ''आश्रम से हरिजन परिवार नहीं जा सकता। यदि तुम उनके साथ नहीं रह सकती तो तुम आश्रम छोड़कर जा सकती हो।'' कस्तूरबा ने अंत में गांधी जी की इच्छा का पालन किया। वे हरिजन परिवार के साथ रहने लगीं। हरिजन परिवार का आश्रम में देखकर बहुत से दानियों ने दान देना बंद कर दिया। आश्रम की आर्थिक स्थिति डगमगा गई। उसकी व्यवस्था गांधी जी के भतीजे मगनलाल कर रहे थे। उन्होंने गांधी जी से कहा,''बापू, आपकी नीति से आश्रम की अर्थ व्यवस्था बिगड़ती जा रही है। हमारे पास उसे चलाने के लिए अब द्रव्य नहीं रह गया है।''

बापू ने कहा– ''घबराओ नहीं, भगवान सहायता करेगा।'' और सचमुच दूसरे दिन ही भगवान ने सहायता कर दी। बापू बैठे हुए कुछ काम कर रहे थे, सबेरे का वक्त था। एक बालक दौड़ा–दौड़ा आया और बोला, "बापू मोटर में एक सेठ आए हैं, आपको बुला रहे हैं।'' गांधी जी उठकर फाटक के पास गए। मोटर में बैठे सेठ ने उतरकर कहा–"गांधी जी, मैं आश्रम की सहायता करना चाहता हूँ। आप स्वीकार करेंगे न ?" गांधीजी ने कहा–''क्यों नहीं।

"तो कल मैं इसी समय आऊँगा। आप आश्रम में ही रहें"–इतना कहकर सेठ चले गए। दूसरे दिन ठीक समय पर फाटक के पास मोटर का भोंपू बजा। गांधी जी समझ गए कि सेठ का आगमन हुआ है। वे आश्रम के द्वार पर गए। सेठ ने तुरंत उनके हाथ में तेरह हजार के नोट रख दिए। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा और मोटर में बैठकर लौट गए। गांधी जी को ऐसा दानी और दान देने का ऐसा तरीका पहली बार दिखाई दिया। इस सहायता से एक वर्ष के लिए मगनलाल भाई बेफिक्र हो गए। इसी अवधि में लोगों की गांधी जी के हरिजन कार्य में रुचि बढ़ गई और वे उनकी सहायता के लिए तैयार हो गए । आश्रम में हरिजन परिवार आश्रमवासियों के साथ हिलमिल गया। हरिजन दूधा भाई की एक छोटी कन्या थी। गांधी जी उसे बहुत प्यार करते थे। उसे उन्होंने अपनी पोष्य पुत्री बना लिया। जब आश्रम का कार्य निश्चित गति से चलने लगा तब गांधी जी ने

अपने सिद्धांतों को जनता तक पहुँचाने के लिए आश्रम से बाहर जाने के कार्यक्रम बनाए।

हिन्दू विश्वविद्यालय का क्रांतिकारी भाषण

4 फरवरी, 1916 का दिन वाराणसी (बनारस) के इतिहास में सदा स्मरण रहेगा। महामना पं. मदन मोहन मालवीय ने देश के कोने–कोने में घूमकर चंदा एकत्र कर हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। शहर से दूर कई सौ एकड़ भूमि पर विश्वविद्यालय के भव्य भवन खड़े थे। उस दिन मालवीय जी का स्वप्न साकार हुआ था । इसका शिलान्यास वायसराय द्वारा हुआ था और उसी के उपलक्ष्य में यह उद्घाटन समारोह मनाया जा रहा था। देश भर के राजा–महाराजा, अँग्रेज अधिकारी आदि गण्यमान्य लोग इकट्ठे हुए थे। महाराज दरभंगा हीरे–जवाहरातों में जड़ी पोशाक पहनकर सभापति पद पर विराजमान थे। आज महात्माजी को बोलना था। सभापति ने उन्हें मंच पर आने के लिए आमंत्रित किया। काठियावाड़ी पगड़ी, अँगरखा, धोती और चप्पल पहने ठिगना और साँवला–सा व्यक्ति धीरे–धीरे मंच पर आकर खड़ा हो गया और उसने बोलना प्रारंभ कर दिया–

"मैं भाषण देने नहीं आया। अपनी बात कहने आया हूँ। मैं देख रहा हूँ कि यहाँ वक्ता अँग्रेजी में बोल रहे हैं, जब कि यहाँ की जनता हिंदी बोलती और समझती है। हम अपनी भाषाओं का कब तक तिरस्कार करते रहेंगे ? इस मंच पर बोलने वाले महाराजा और अन्य वक्ताओं ने भारत की गरीबी की बात कही, परन्तु मैं यहाँ तो गरीबी की कोई निशानी नहीं देखता। राजा–महाराजा हीरे–जवाहरातों की पोशाक में शोभित हो रहे हैं। मेरा विश्वास है कि भारत का उद्धार तभी होगा, जब धनी–मानी लोग अपने हीरे–जवाहरात को जनता की गरीबी दूर करने के लिए अर्पित कर देंगे । गरीब जनता की जेब से निकाले गए पैसों से धनी लोग शानदार जिंदगी बिता रहे हैं; ऊँचे–ऊँचे महल खड़े कर रहे हैं। मैं राजद्रोहियों का सम्मान करता हूँ। पर उनके हिंसक कार्यों को पसंद नहीं करता। मैंने विश्वनाथ के मंदिर के आस–पास जो गंदगी देखी उससे मुझको बहुत दुःख हुआ। रेल यात्रा करते समय भी मैं लोगों को डिब्बों में गंदगी फैलाते देखता आया हूँ। अज्ञान ही इसका कारण है। क्या हम जनता को स्वच्छता से रहना नहीं सिखा सकते हैं?"

जब गांधी जी ने ब्रिटिश शासन की तीखी आलोचना प्रारंभ की, तब राजभक्त 'बैठो –बैठो चिल्लाने लगे और नवयुवक तथा विद्यार्थी 'बोलिए–बोलिए' की आवाज लगाने लगे। सभा में हुल्लड़ भी मचने लगा; लोग भागने लगे। सभापति महाराजा दरभंगा सभा छोड़कर चले गए। तब गांधी जी ने हँसते हुए कहा–"मैंने कई सभाओं में लोगों को सभा छोड़कर जाते देखा है, परन्तु सभापति को सभा समाप्त किए बिना जाते नहीं देखा।"

महात्मा जी के भाषण में देश की दशा का जो चित्रण था और पूँजीपति राजा–महाराजाओं की विलासिता पर जो सीधा प्रहार था तथा अँग्रेजी शासन की जो चुभती आलोचना की उसने बड़ी सनसनी फैला दी। वाराणसी (बनारस) के कलेक्टर ने उन्हें तुरंत काशी छोड़ देने का आदेश दिया। मालवीय जी ने आदेश को रद्द कराने की असफल कोशिश की। गांधी जी स्वयं काशी छोड़ने का कार्यक्रम बना चुके थे। अतः वे दूसरे दिन वहाँ से चल दिए ।

महात्मा जी का वाराणसी (बनारस) विश्वविद्यालय में दिया गया पहला भाषण था जिसने सारे देश में तहलका मचा दिया। उन्होंने बिना आडम्बर के सीधे, साफ शब्दों में देश की दशा पर दो आँसू मात्र बहाए थे। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में किसी की प्रसन्नता या अप्रसन्नता की चिंता किए बिना अपनी बात निडर होकर कही। उनके चरित्र की यह बड़ी भारी विशेषता थी ।

चम्पारन में गांधी जी

बिहार के चम्पारन में नील की खेती होती थी। खेती पर बिहारी किसान और गोरों की मालिकी थी। किसानों को अपनी जमीन के 3/20 हिस्से में गोरों के लिए नील की खेती कानूनन करनी पड़ती थी। वहाँ 20 कट्टे का एक एकड़ होता था। उसमें तीन कट्टे नील किसानों को बोनी पड़ती थी। गोरे, किसानों को श्रम का उचित लाभ नहीं देते थे। गांधी जी चम्पारन गए और जब किसानों की शिकायत की जाँच करने लगे, तो गोरों ने उनका विरोध ा किया। वहाँ के अँग्रेज कमिश्नर ने गांधी जी की जाँच में रोड़े अटकाए, उन्हें गिरफ्तार किया परन्तु वायसराय के आदेश से वे छोड़ दिए गए। जाँच में किसानों का पक्ष सही पाया गया और सरकार को सौ वर्ष पुराने तीन कठिया कानून को रद्द करना पड़ा। गोरे नील के व्यापारियों को अनुचित रीति से लिए गए रुपए किसानों को लौटाने पड़े। चम्पारन की सत्याग्रह की लड़ाई में गांधी जी को पीड़ितों के रक्षक के रूप में और अधिक ख्याति प्रदान की।

चम्पारन से गांधी जी अपने आश्रम में लौटे ही थे कि अहमदाबाद के मजदूरों ने उनके सामने अपनी कष्ट कहानी सुनाई। मिल मालिक उन्हें बहुत कम वेतन दे रहे थे। यद्यपि गांधीजी का मिल मालिकों से मधुर संबंध था। फिर भी वे मजदूरों के लिए उनसे झगड़ने को तैयार हो

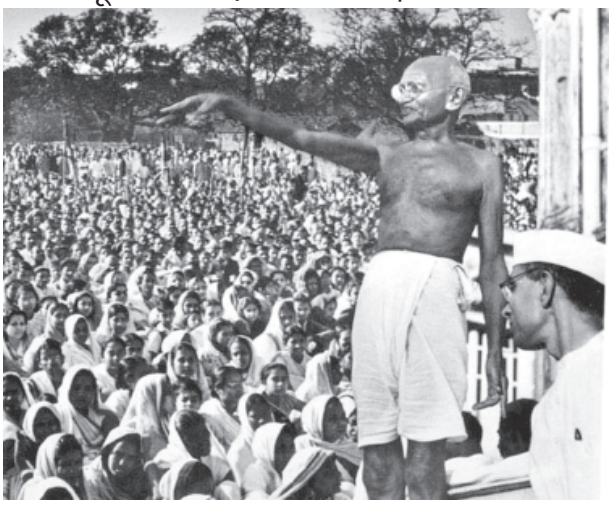

गए, क्योंकि मजदूरों का पक्ष उन्हें सही मालूम हुआ। गांधी जी ने मजदूरों को हड़ताल की सलाह दी, पर यह शर्त रखी कि हड़ताल सर्वदा शांतिपूर्ण हो। हड़ताल कई दिनों तक चली। इस बीच गांधी जी ने देखा कि मजदूरों का धैर्य टूट रहा है और वे हिंसा की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। अतः उन्होंने आत्म शुद्धि की दृष्टि से मजदूरों पर प्रभाव डालने के लिए उपवास शुरू कर दिया। मिल मालिक झुके और उन्होंने पंच फैसले के अनुसार मजदूरों की माँग पूरी कर दी।

खेड़ा सत्याग्रह

गुजरात में खेड़ा नामक एक जिला है। वहाँ के अधिकतर लोग किसान हैं। खेती उनकी आजीविका का एकमात्र साधन है। सन् 1917–18 में जिले की अधिकांश फसल मारी गई थी। किसान निराश थे, लगान देने में असमर्थ थे परन्तु सरकार सख्ती से लगान वसूल करने पर तुल गई थी। कायदा यह था कि फसल रुपए में चार आने से कम हो, तो उसे साल का पूरा लगान और यदि छह आने से कम और चार आने से अधिक हो तो उसे आधा लगान मुलतबी रखा जा सकता है। गांधी जी को जानकारी थी कि जिले के छह सौ गाँवों में सिर्फ एक गाँव का पूरा लगान और एक सौ चार गाँवों का आधा लगान मुल्तबी रखने का सरकार ने निर्णय लिया है। किसान सरकार द्वारा दी गई राहत से संतुष्ट नहीं थे । सरकार के एजेण्ट, पटवारियों, ने सरकार को झूठी रिपोर्ट दी थी। विवाद इस बात पर था कि फसल कितने आने हुई है। गांधी जी ने सरकार के सामने प्रस्ताव रखा कि वह प्रजा के प्रतिनिधियों की सहायता से फसल की उपज की जाँच कराए और किसानों को न्यायपूर्ण राहत दे।

सरकार ने गांधी जी के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और लगान की वसूली सख्ती से प्रारंभ कर दी। अब गांधी जी के पास सत्याग्रह अस्त्र के उपयोग के सिवाय दूसरा उपाय नहीं था। उन्होंने किसानों को लगान न

चुकाने की सलाह दी। जिले भर में लगान बंदी सत्याग्रह का जोर बढ़ा, तो सरकार जरा झुकी। उसने छोटे किसानों की लगान वसूली स्थगित कर दी। परन्तु बड़े किसानों की लगान वसूली में कुछ भी राहत नहीं दी। गांधी जी ने सरकार के इस निर्णय को सत्याग्रह की आधी विजय कहा क्योंकि गरीब और अमीर दोनों श्रेणियों के किसानों को फसल के खराब हो जाने के कारण कष्ट उठाना पड़ रहा था। जिन्हें लगान चुकाना था उन्हें अपने किसानी के पशु, स्त्रियों के आभूषण और घर का दीगर सामान बेचना पड़ रहा था। उनके सामने संकट यह था कि यदि वे समय पर लगान न चुकाते, तो उनके खेत नीलाम पर चढ़ जाते।

यह सच है कि सत्याग्रह से पूर्ण सफलता नहीं मिली, परन्तु इससे जनता में सरकार के अन्यायों के विरुद्ध लड़ने का साहस अवश्य पैदा हुआ।

विद्रोही गांधी

ब्रिटिश सरकार ने महायुद्ध समाप्त होने पर भारतीयों की सहायता के उपलक्ष्य में कुछ शासन सुधार प्रस्तावित किए। उन्हें कुछ राजनीतिक नेताओं ने स्वीकार करने के पक्ष में और कुछ ने विपक्ष में राय दी । विपक्ष में राय देने वाले लोग गरम दल के लोग कहलाए और पक्ष में राय देने वाले नरम दल के। गरम दल वाले सुधारों को निष्प्राण कहते थे और चाहते थे कि सरकार साम्राज्य के अंतर्गत भविष्य में पूर्ण शासकीय अधिकार प्रदान कर दे। इधर भारतीयों को स्वाधीनता की आकांक्षा बढ़ रही थी। ब्रिटिश सरकार ने रोलेट की अध्यक्षता में एक कमेटी कायम की। उसने अपनी रिपोर्ट में भारतीयों की स्वतंत्रता की भावनाओं को रौंदने के लिए सुझाव पेश किए, जिनके अमल में आने पर जनता सम्मानपूर्वक जिंदगी नहीं बिता सकती थी उसके अनुसार सरकार किसी को भी राजद्रोही होने के संदेह में, बिना मुकदमा चलाए, बंदी बना सकती थी। बिना आज्ञा वह निर्दिष्ट स्थान को नहीं छोड़ सकता था। पुलिस की आज्ञा से उसे उसके सामने हाजिरी देनी पड़ती। जिस पुस्तक को सरकार राजद्रोहात्मक समझती उसे न कोई रख सकता था और न बेच सकता था। व्यक्ति की स्वाधीनता पर यह जबर्दस्त कुठाराघात था।

जिस समय 'रोलेट कमेटी' की रिपोर्ट प्रकाशित हुई, गांधी जी बीमारी से उठकर धीरे –धीरे स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। उन्होंने कुछ मित्रों से सलाह ली और सरकार के प्रस्तावित 'रोलेट बिल' का विरोध करने का निश्चय किया। सरकार ने रोलेट की रिपोर्ट को कानून का रूप दे दिया ।

गांधी जी दमनकारी कानून के संबंध में नेताओं से विचार करने के लिए चेन्नई (मद्रास) गए। उन्होंने नेताओं से कहा कि हमें इस कानून को रद्द कराने के लिए आंदोलन करना होगा यह आंदोलन सत्याग्रह के सिद्धांत के अनुसार चलाना होगा। चेन्नई (मद्रास) के नेता गांधी जी से सहमत हो गए। अतः सारे देश में 30 मार्च 1919 को हड़ताल करने की घोषणा की गई। परन्तु बाद में तारीख बदलकर 6 अप्रेल निश्चित की गई। घोषणा के अनुसार ही सारे देश में हड़ताल हो गई दिल्ली में पूर्व निर्धारित 30 मार्च 1919 को हड़ताल की गई। स्वामी श्रद्धानंद ने जोरदार भाषण दिया। पुलिस और सेना ने जनता को तितर–बितर करने की कोशिश में गोली चलाई, जिससे कुछ आदमी मारे गए। स्वामी श्रद्धानंद का ऊँचा, भव्य शरीर था। संन्यासी के वेश में वे जन समूह के आगे चल रहे थे। जब सैनिकों ने उन्हें रोका तो उन्होंने अपनी छाती खोलकर सामने कर दी। पुलिस की गोली ने स्वामी जी के प्राण ले लिए। दिल्ली की जनता का बलिदान और स्वामी जी के दिलेरी के समाचार फैलते ही देश की जनता में बिजली–सी दौड़ गई। वह कुछ करने के लिए उतावली हो गई। 6 अप्रेल को मुंबई में हड़ताल

के रूप में गांधी जी ने सत्याग्रह का श्रीगणेश किया। हजारों लोग जुलूस बनाकर सड़कों पर निकले गांधी जी ने कई स्थानों पर भाषण दिए और जनता को सत्याग्रह के लिए प्रेरित किया। गांधी जी ने अपनी दो जप्त पुस्तकें– "हिन्दू स्वराज्य" और "सर्वोदय"– को बेचकर कानून भंग किया। यह भी सत्याग्रह का एक प्रकार था। परन्तु सरकार ने गांधी जी और उनके साथियों को कानून भंग करने के अपराध में गिरफ्तार नहीं किया।

गांधी जी की गिरफ्तारी

गांधी जी दिल्ली की जनता के निमंत्रण पर दिल्ली रवाना हो गए, परन्तु मार्ग में ही पुलिस ने उन्हें दिल्ली और पंजाब में न जाने देने की सरकारी सूचना दी। पुलिस ने उन्हें गाड़ी से उतरने को कहा। जब वे नहीं उतरे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें मुंबई भेज दिया गया, जहाँ वे छोड़ दिए गए।

गांधीजी की गिरफ्तारी का समाचार ज्यों ही अहमदाबाद और दूसरे शहरों में पहुँचा त्यों ही जनता में असंतोष की आग भड़क उठी और वह हिंसा के काम करने लगी। स्थान–स्थान पर हड़तालें हुईं। एक स्थान पर पुलिस कर्मचारी की हत्या की गई और रेल पटरी उखाड़ी गई। अहमदाबाद में सरकार ने फौजी कानून जारी कर दिए। गांधी जी को जनता के हिंसा के कार्यों से बड़ा दुख हुआ। वे मुंबई से अहमदाबाद गए, कमिश्नर से मिले, उसे फौजी कानून की अनावश्यकता समझाई। अंत में सरकार ने फौजी कानून उठा लिया, जिससे जनता शांत हो गई परन्तु गांधी जी का ह्रदय जनता के हिंसापूर्ण कार्यों के कारण बहुत दिनों तक अशांत बना रहा। उन्होंने प्रायश्चित स्वरूप तीन दिन तक उपवास किया और सत्याग्रह को स्थगित कर दिया। जनता ने सत्याग्रह का ठीक–ठीक तरह से अर्थ नहीं समझा था । मुंबई में गिरफ्तार साथियों को छुड़ाने के लिए लोगों ने जेल पर धावा बोल दिया था। यह सत्याग्रह के सिद्धांत के विपरीत कार्य था।

गांधी जी स्वाधीनता की लड़ाई में मुसलमानों का भी सहयोग आवश्यक समझते थे। भारत में मुसलमान अँग्रेजों से इसलिए नाराज थे कि उन्होंने युद्ध की संधि में टर्की के सुलतान को खलीफा पद से वंचित कर दिया था और उसके स्थान पर अपने एक पिट्ठू को खलीफा बना दिया था। गांधी जी ने मुसलमानों के आंदोलन में साथ देने के लिए देश को तैयार किया। खिलाफत की एक सभा में उन्होंने विदेशी माल के बहिष्कार की जब बात कही तो उस पर लोग सहमत नहीं हुए। फिर एकाएक उनके मुख से असहयोग शब्द निकल गया। उन्होंने कहा कि अगर हम सरकार से सहयोग करना छोड़ दें तो उसे हमारी माँगों को स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ेगा। गांधी जी को ऐसा प्रतीत हुआ कि सत्याग्रह की अपेक्षा असहयोग आंदोलन अधिक शांतिपूर्ण ढंग से चलाया जा सकता है। यदि लोग अपनी सरकारी उपाधियाँ छोड़ दें, वकील कचहरी जाना छोड़ दें, विद्यार्थी सरकारी स्कूलों में पढ़ना छोड़ दें, और सारे सरकारी नौकर नौकरी छोड़ दें, तो सरकार का काम–काज बिल्कुल ठप्प हो जाएगा।

गांधी जी ने मुसलमानों को खिलाफत के मसले को हल करने के लिए असहयोग का मार्ग सुझाया था, परन्तु बाद में यह मार्ग खिलाफत तक सीमित नहीं रहा, स्वाधीनता के आंदोलन का एक अंग बन गया।

गांधी जी ने रोलेट एक्ट के विरोध में हड़ताल के रूप में सत्याग्रह प्रारंभ करने की जो धारणा की थी, उसके फलस्वरूप देश–भर में हड़तालें हुईं और जनता पर पुलिस के प्रहार भी हुए। अमृतसर में हड़ताल मनाने के लिए जनता ने जलियाँवाला बाग में सभा का आयोजन किया। सभा में सरकार की दमन नीति का विरोध किया जाने वाला था। पंजाब सरकार ने

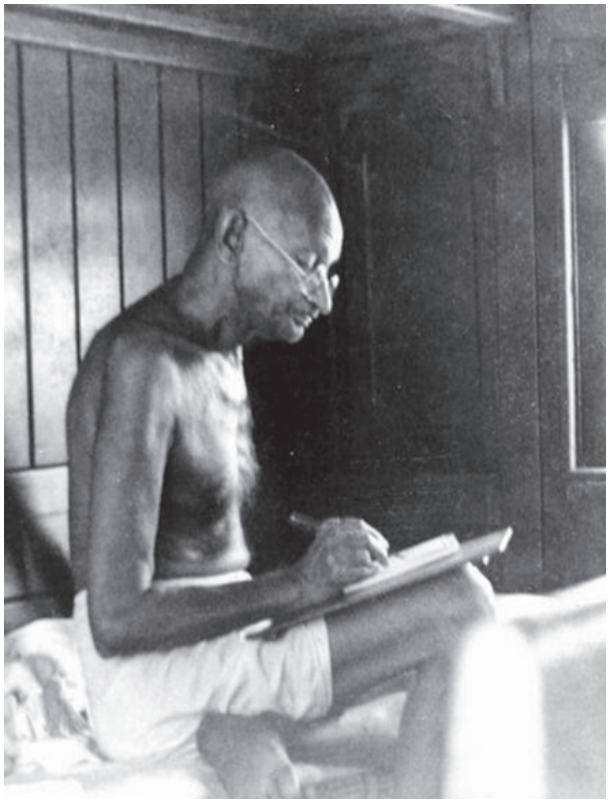

जनरल ओ डायर को अमृतसर की स्थिति सँभालने के लिए नियुक्त कर दिया। उसने आते ही सार्वजनिक सभा की मनाही की घोषणा कर दी। जनता ने उसकी उपेक्षा की। 'बागजन–समूह से भर गया। सभा कार्य चल ही रहा था कि जनरल ओ डायर 50 सैनिकों को लेकर वहाँ पहुँच गया और उसने पूर्व सूचना दिए बिना ही जनता पर गोली दागने का आदेश दे दिया। अधिकांश जनता भाग नहीं सकी। पल्टन ने 1650 बार गोली दागी, जिससे सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 379 आदमी मारे गए और 1137 घायल हुए। उसके बाद ही जनरल ओ डायर ने आर्डर जारी किया कि भारतीय एक विशिष्ट सड़क पर खड़े होकर न चलें, चौपाया होकर रेंगें। प्रत्येक भारतीय को चाहिए कि अँग्रेज अफसर के आगे झुककर सलाम करे।

कानून भंग करने वाले को कोड़ों से पीटा जाता था। सारा पंजाब दमन की चक्की में पिस रहा था। गांधी जी को जनता की हिंसा और सरकार की प्रतिहिंसा से बड़ा क्षोभ हुआ। इसलिए उन्होंने 18 अप्रेल को रोलेट एक्ट विरोधी सत्याग्रह आंदोलन बंद करने की घोषणा कर दी।

गांधी जी सत्याग्रह आंदोलन को अपनी हिमालय जैसी भूल कहते थे। उसे स्थगित करने से गांधी जी के कई साथी रुष्ट हुए और पंजाब के युवकों ने तो यहाँ तक कहा कि यदि गांधी जी आंदोलन बंद न करते तो सरकार की दमन करने की हिम्मत न पड़ती।

असहयोग–आंदोलन

जलियाँवाला बाग हत्याकांड तथा अन्य नृशंस अत्याचारों के लिए उत्तरदायी जनरल ओ डायर की भारत सरकार ने निंदा न कर प्रशंसा की। कुछ लोगों ने उसे ब्रिटिश साम्राज्य का रक्षक तक घोषित किया। इससे स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सरकार बल प्रयोग से भारतीयों पर शासन करना चाहती है। उन्हें स्वाधीन बनाने का उसका कोई इरादा नहीं है।

सरकार के जन विरोधी रुख से गांधी जी का ब्रिटिश न्याय में रहा सहा विश्वास भी उठ गया। उन्होंने अपने साथियों के साथ अफ्रीका में बोअर युद्ध तथा जुलू विद्रोह में घायलों की सेवा सुश्रुषा कर ब्रिटिश सरकार की सहायता की थी। प्रथम महायुद्ध के समय इंग्लैंड में भारतीयों को घायलों की सेवा के लिए तैयार किया गया था और भारत आने पर मित्रों और जनता के विरोध के बावजूद खेड़ा के रँगरूटों की भर्ती का भी प्रयत्न किया था। उन्होंने ये सब सेवा कार्य इसलिए किए थे कि ब्रिटिश सरकार के साथ सद्भावना प्रदर्शित करने से भारत को शीघ्रातिशीघ्र स्वराज्य प्राप्त करने में सहायता मिल सकेगी।

युद्ध की समाप्ति के बाद सरकार ने स्वराज्य की दिशा में जो पहला कदम उठाया था, वह मांटेग्यु चेम्सफोर्ड के सुधार के अंतर्गत कुछ शासकीय विभागों का हस्तांतरण था। उन विभागों पर यद्यपि भारतीय मंत्री प्रशासन कर सकते थे, परन्तु उन पर गवर्नर और वाइसराय का अंकुश

रखा गया था। इस द्वैत शासन वाले सुधारों का अधिकांश नेताओं ने विरोध किया। उन्हें निकम्मा कहा। गांधी जी को विश्वास हो गया कि बिना संघर्ष किए स्वराज्य की मंजिल तय नहीं हो सकेगी। उन्हें असहयोग ही एक ऐसा उपाय सूझ पड़ा जो स्वराज्य देने के लिए अँग्रेजों को विवश कर सकता था ।

31 जुलाई 1920 की रात को भारतीय जनता को 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे प्राप्त करके ही रहूँगा ' का मंत्र देने वाले तेजस्वी नेता लोकमान्य तिलक का अचानक मुंबई में देहावसान हो गया। दूसरे दिन पहली अगस्त को गांधी जी ने लोकमान्य द्वारा भारतीय जनता को दिए गए वचन को पूरा करने के लिए ब्रिटिश सरकार से असहयोग युद्ध की घोषणा कर दी और ब्रिटिश सरकार द्वारा दिए गए 'कैसरे हिन्द पदक' को लौटाते हुए वायसराय को लिखा, ''ब्रिटिश सरकार लगातार अन्याय करती जा रही है और अन्यायकर्ता अधिकारियों की पीठ थपथपा रही है। ऐसी स्थिति में मेरा ब्रिटिश सरकार के न्याय में विश्वास नहीं रहा। इसलिए मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मुझे ब्रिटिश सरकार को सहयोग नहीं देना चाहिए। मैं अपने देशवासियों को भी यही सलाह दे रहा हूँ।''

असहयोग के कार्यक्रम में काउंसिलों अदालतों, स्कूलों, कॉलेजों और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के अतिरिक्त सरकारी पदवियों को लौटाने की बात भी थी। उस समय अँग्रेज सरकार अपने भक्तों को रायबहादुर, रायसाहब, खानबहादुर, खान साहब, सर आदि की पदवियाँ प्रदान किया करती थी। गांधी जी ने लोगों से सरकारी कचहरियों में न जाकर पंचायतों में अपने झगड़ों को सुलझाने की सलाह दी। विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शालाओं और विद्यापीठों में पढ़ने को कहा। विदेशी वस्तुओं के स्थान पर खादी धारण करने का आग्रह किया। लोगों से शराब और नशीली चीजों का प्रयोग न करने की अपील की, सरकारी कर्मचारियों को भी नौकरी छोड़ने को प्रेरित किया। सारांश यह कि भारतीयों को अँग्रेज सरकार से सर्वथा संबंध विच्छेद करने की बात सुझाई गई। संक्षेप में असहयोग आंदोलन का यही उद्देश्य था।

गांधी जी ने आंदोलन का श्री गणेश करने के पूर्व जनता से प्रत्येक स्थिति में शांति बनाए रखने की प्रार्थना की, हिंसा के कार्यों से दूर रहने का उपदेश दिया। उस समय देश में ऐसी गुप्त क्रांतिकारी संस्थाएँ थीं, जो अहिंसा में विश्वास नहीं रखती थीं। उनके द्वारा यदा –कदा अँग्रेज अधिकारियों पर घातक आक्रमण होते रहते थे। क्रांतिकारियों का विश्वास था कि हिंसा की घटनाओं से अँग्रेज आतंकित होकर भारतीयों को सत्ता सौंप देंगे। गांधी जी का मत उसके विपरीत था। उन्होंने अनुभव किया था कि यदि स्वराज्य आंदोलन को जनता तक पहुँचाना है, तो उसे अहिंसा का रूप ही देना होगा। हिंसा का मार्ग जन समूह को आकर्षित नहीं कर सकता। इसलिए वे सत्याग्रहियों को मारना नहीं, मरना सिखाते थे और जनता में हिंसा की प्रवृत्ति देखते तो आंदोलन को स्थगित कर आत्मशुद्धि के लिए स्वयं उपवास करते थे।

गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को प्रारंभ करते ही यह घोषित किया कि यदि जनता ने मेरे सुझाए मार्ग का अवलंबन किया, तो एक वर्ष में ही भारत को स्वराज्य प्राप्ति हो जाएगी।

उन्होंने अपने आंदोलन का समर्थन कोलकाता काँग्रेस से प्राप्त कर लिया। कोलकाता काँग्रेस के बाद से काँग्रेस पर गांधी जी का एक प्रकार से आधिपत्य ही हो गया। जो काँग्रेस पहले अँग्रेज और अँग्रेजियत का आदर करने वाले नेताओं के इशारे पर चलती थी, वह अब जनसाधारण के प्रतिनिधि गांधी जी के इशारे पर नाचने के लिए तैयार हो गई। काँग्रेस में सादगी का वातावरण दिखाई देने लगा। काँग्रेसी जनता के बीच धरती पर बैठकर अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में बात करने लगे और धोती, कुर्ता तथा टोपी की वेश–भूषा में रहने लगे। गांधी जी ने काँग्रेस और काँग्रेस कार्यकर्ताओं की कायापलट कर दी।

अंतर्मन मम विकसित करो हे

कोलकाता काँग्रेस के बाद गांधी जी अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए रवीन्द्र नाथ ठाकुर के शांति निकेतन में गए। जनरव से दूर, प्रकृति की गोद में स्थित यह निकेतन गांधी जी को अत्यंत मुग्धकारी लगने लगा। छोटी, सादी, झोपड़ियों में अध्यापक, छात्र और छात्राएँ रहकर परिवार के समान जीवन यापन करते थे। पेड़ों के नीचे अध्ययन–अध्यापन होता था। इन दृश्यों को देखकर गांधी जी को लगा, मानो प्राचीन गुरुकुल ने पुनः जीवन धारण कर लिया हो। उन्हें एक बात से तो और भी हर्ष हुआ कि विश्राम के क्षणों में छात्र–छात्राओं के कंठों से रवीन्द्र संगीत झरता था। वहाँ एक प्रार्थना– मंदिर था, जहाँ नित्य प्रार्थना होती थी। उस समय शांति निकेतन में भारत भक्त सी.एफ. एंड्रूज भी थे, जिन्हें गांधी जी प्यार से चार्ली कहा करते थे। काका कालेलकर भी वहीं थे, जो बाद में गांधी जी के आश्रम में आ गए थे।

रवि बाबू ने गांधी जी का शिक्षकों और शिक्षितों से मिलाप कराने के लिए प्रार्थना–मंदिर के प्रांगण में एक सभा आयोजित की। गांधी जी एक छोटे–से आसन पर आसीन किए गए। सामने गंध–पुष्प रखे गए। वातावरण सौरभ

से भर गया।

बालाओं ने कवि के इस गीत को गाया

अंतर्मन मम विकसित करो हे,
निर्मल करो, उज्ज्वल करो,
सुंदर करो हे,
जागृत करो, उन्नत करो,
निर्भय करो हे ।
अंतर्मन विकसित करो, वंदित करो हे।

गांधी जी शांत भाव से बैठे रहे और अंत में धीरे–से उन्होंने छात्रों से अपनी मातृभाषा और मातृभूमि के प्रति कर्तव्य पालन के संबंध में दो शब्द कहे। रवि बाबू ने 'तोमारे करि नमस्कार' गीत से सभा की समाप्ति की।

असहयोग आंदोलन की आँधी

कोलकाता कॉंग्रेस के निर्णय के पश्चात् देश भर में 'असहयोग कर दो असहयोग कर दो' आवाज़ गूँजने लगी। स्कूल–कॉलेजों से विद्यार्थी हजारों की संख्या में निकल आए और राष्ट्रीय गीत गा–गाकर जनता में आज़ादी की आग सुलगाने लगे। कौंसिल के चुनाव में गैर कॉंग्रेसी खड़े हुए और कौंसिल के सदस्य बन गए। उनमें सरकारी बिलों का विरोध करने का साहस न था। इस प्रकार कौंसिल की निस्सारता सिद्ध हो गई।

दिसम्बर 1920 में नागपुर कॉंग्रेस ने भी गांधी जी के असहयोग प्रस्ताव का समर्थन कर दिया। आंदोलन को चलाने के लिए लोकमान्य तिलक की स्मृति में एक करोड़ का 'तिलक स्वराज्य फंड' कायम हुआ ।

स्वराज्य के कई अर्थ लगाए गए, परंतु गांधी जी उसका अर्थ 'अपना राज्य' लगाते थे। गांधी जी ने कॉंग्रेस का नया संविधान बनाया और गाँव–गाँव में कॉंग्रेस कमेटियाँ कायम कीं। उन्होंने हिन्दू–मुसलमानों को परस्पर भाई–भाई के समान रहने का उपदेश दिया, अछूत कही जाने वाली जातियों को अछूत न रखने के लिए आग्रह किया। स्वराज्य का आंदोलन जनता तक पहली बार पहुँचा था। इससे उसमें प्रबल उत्साह दिखाई पड़ता था। महात्मा जी ने वर्ष भर देश के कोने–कोने में दौरा किया। वे रेल, मोटरगाड़ी और बैलगाड़ी का भी यात्रा में उपयोग करते थे। जहाँ जाते, विदेशी वस्तुओं को फेंकने की बात कहते और उनके सामने ही लोग विदेशी कपड़ों का ढेर लगा देते थे। देश भर में, जगह–जगह विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी। यद्यपि सरकार ने देश भर में गिरफ्तारियों की धूम मचा दी, पर वह गांधी जी को, उनकी लोकप्रियता के कारण, पकड़ने से झिझकती रही।

जनता उन्हें असाधारण पुरुष मानती थी। इसलिए उनकी एक प्रकार से आराधना करने लगी। एक बार बिहार के एक गाँव में जब वे यात्रा कर रहे थे, तब उनकी मोटर पंचर हो गई। वे उतरकर चलने लगे। सामने एक बुढ़िया मिली, बोली–"बेटा, मेरी उमर 104 साल की है। न जाने कब चोला छूट जाए। मैं एक बार महात्मा गांधी को देखना चाहती हूँ।" गांधी जी ने पूछा– "क्यों माँ, तू उसे क्यों देखना चाहती है?" बुढ़िया बोली, "बेटा, वह भगवान का अवतार है न।"

असहयोग आंदोलन के काल में गांधी जी खादी का पंछा, खादी का कुर्ता और खादी की सफेद टोपी पहनते थे। उनका अनुसरण कर कॉंग्रेसी देशभक्त भी उन्हीं के समान खादी की सफेद टोपी पहनने लगे, जिसे बाद में लोग गांधी टोपी कहने लगे। थोड़े दिनों के बाद गांधी जी ने गरीब–से–गरीब जो वस्त्र पहन सकता है, उसको पहनना प्रारंभ कर दिया। अब उनकी पोशाक थी–खादी की लँगोटी, घुटनों तक धोती और जाड़े के दिनों में खादी की शाल। वे भीतर से तो महात्मा थे ही, बाहरी वेशभूषा से भी महात्मा लगते थे।

असहयोग आंदोलन तेजी पकड़ता जा रहा था। शहर–शहर, गाँव–गाँव में सभाएँ होती थीं। जोशीले भाषण दिए जाते थे। राष्ट्र को

जगानेवाला 'वन्देमातरम्' गीत गाया जाता था, जिससे सरकार बहुत चिढ़ती थी। लड़के और नौजवान गाते थे–

छीन सकती है नहीं सरकार
वंदे मातरम्।
हम गरीबों के गले का हार
वंदे मातरम्।।
सिरचढ़ों के सिर में चक्कर
उस समय आता जरूर ।
कान में पहुँची जहाँ झंकार
वंदे मातरम्।।

कॉंग्रेस द्वारा स्वराज्य प्राप्ति की घोषणा हुए एक वर्ष की समाप्ति का समय ज्यों–ज्यों निकट आता जाता था, नवयुवक अधीर हो जाते थे। शांतिमय असहयोग आंदोलन में युद्ध की गर्मी नहीं थी। वे लड़ाकू ढंग के आंदोलन की माँग कर रहे थे। गांधी जी कर बंदी आंदोलन आरंभ कर सकते थे, परंतु उसे देशव्यापी बनाने में उन्हें हिंसा का भय था। जनता जब कर न देती, तो सरकार जोर–जुल्म कर उसे वसूल करने की कोशिश करती। ऐसी दशा में दोनों ओर से मारपीट की संभावना थी। परन्तु नवयुवकों के जोश को देखते हुए उन्होंने सीमित दायरे में करबंद आंदोलन का प्रयोग करना चाहा और इसके लिए गुजरात के बारडोली जिले को चुना। वे आंदोलन की तैयारी कर ही रहे थे कि उन्हें समाचार मिला कि चौरी–चौरा (उ.प्र) में जनता और पुलिस में मुठभेड़ होने के कारण जनता ने पुलिस चौकी के साथ कुछ पुलिस कर्मचारी भी जला डाले। गांधी जी को इससे अत्यंत दुख और निराशा हुई। उन्होंने बारडोली में सत्याग्रह प्रारंभ करने का विचार छोड़ दिया और सारे देश में चलने वाले असहयोग–आंदोलन को भी स्थगित कर दिया तथा आत्मशुद्धि के लिये 6 दिन का उपवास भी किया।

गांधी जी को सरकार अधिक समय तक मुक्त नहीं रख सकती थी। उसने उन्हें 'यंग इंडिया' में प्रकाशित लेख के आधार पर गिरफ्तार कर लिया और अहमदाबाद की अदालत में राजद्रोह का मुकदमा चला दिया। अँग्रेज जज ब्रुम फील्ड ने सजा सुनाते समय जरा सिर झुकाकर कहा, "आप करोड़ों लोगों की दृष्टि में महान् देशभक्त और नेता हैं। जो आपसे राजनीति में मतभेद रखते हैं, वे आपके ऊँचे आदर्श और संत के समान जीवनचर्या के कारण आपका आदर करते हैं। कानून की रक्षा के लिए मैं आपको 6 वर्ष की सादी सजा दे रहा हूँ, परन्तु यदि परिस्थिति बदले और सरकार आपको इसके पूर्व ही छोड़ दे, मुझे सबसे अधिक खुशी होगी।'' सरकारी अँग्रेज, जिनकी सरकार के खिलाफ गांधी जी अहिंसात्मक लड़ाई लड़ते थे, उनका सम्मान करते थे, क्योंकि वे सत्यवादी और निश्छल महापुरुष थे ।

छह वर्ष की सजा काटने के लिए गांधी जी को यरवदा जेल में रखा गया। वहाँ उन्होंने जेल में नियमों का पालन किया। चरखे के सिवाय और किसी चीज़ की माँग नहीं की। उन्होंने अपना समय चरखा कातने के अतिरिक्त महान् लेखकों के ग्रंथों के अध्ययन में व्यतीत किया। सभी धर्मों के ग्रंथों का भी वे पारायण करते रहते थे।

एक रात उनके पेट में असह्य पीड़ा हुई। जेल में अँग्रेज सर्जन ने उनकी परीक्षा की और उसे ऐसा जान पड़ा कि यदि तुरंत शल्य–क्रिया न की गई तो उनके प्राण खतरे में पड़ सकते हैं। इसलिए उसे सरकार की अनुमति लिए बिना शल्य–क्रिया कर आँतपुच्छ काट डाला। इसके बाद भी गांधी जी का स्वास्थ्य सुधर नहीं रहा था। सरकार उन्हें जेल में मरने देना नहीं चाहती थी, अतः वे सजा पूरी होने के पूर्व ही छोड़ दिए गए। छूटने के बाद वे मुंबई में कुछ समय तक रहे, जहाँ उन्होंने अपना स्वास्थ्य सुधारा।

असहयोग–आंदोलन की समाप्ति के बाद कॉंग्रेसियों के पास उस समय एक ही कार्यक्रम

रह गया था, वह था कौंसिलों में जाकर सरकार के काम में अड़ंगे डाल उन्हें भंग करने का। कुछ कॉंग्रेस जन कौंसिल प्रवेश के पक्ष में नहीं थे। दोनों गांधी जी से जब सलाह लेने आए तो उन्होंने दोनों को अपना–अपना मार्ग ग्रहण करने की छूट दे दी और स्वयं रचनात्मक कार्यों में लग गए। उनके रचनात्मक कार्य थे–चरखा, खादी, ग्राम सुधार, नशाबंदी, हरिजनोद्धार, हिन्दू–मुस्लिम एकता आदि ।

सन् 1924 में जब देश में हिन्दू–मुस्लिमों में सांप्रदायिक संघर्ष हुआ तो उन्हें आंतरिक पीड़ा हुई। वे संघर्ष के क्षेत्र दिल्ली में गए और वहाँ मुसलमान नेता के घर रहकर उन्होंने 21 दिन का उपवास किया। जब हिन्दू– मुसलमान दोनों ने भाई–भाई के समान रहने का उन्हें आश्वासन दिया, तब मुस्लिम भाई के हाथ से संतरे का रस ग्रहण कर उपवास तोड़ा। देश में जब–जब हिंसा भड़क उठती, गांधी जी उपवास द्वारा आत्मशुद्धि करते।

गांधी जी ने जनता के हृदय को शुद्ध करने के लिए देशव्यापी यात्रा की। वे कहा करते थे, "जब तक हम अपनी शुद्धि नहीं कर लेंगे, स्वराज्य के अधिकारी नहीं होंगे।" अपनी सभाओं में खादी प्रचार और हरिजनोद्धार पर बराबर बल देते थे और सभा की समाप्ति पर जब इन कार्यों के लिए आर्थिक सहायता की अपील करते, तब अनेक स्त्रियाँ अपने आभूषण उतारकर उन्हें भेंट कर देती थीं।

गांधी जी ने यरवदा जेल से छूटने के बाद ही कहा था कि मैं कॉंग्रेस और राजनीति से अलग होना चाहता हूँ, परन्तु कॉंग्रेस जन उन्हें छोड़ना नहीं चाहते थे। सन् 1924 में बेलगाँव में कॉंग्रेस अधिवेशन होने जा रहा था। कॉंग्रेस नेता गांधी जी को उसका सभापतित्व स्वीकारने का जब बहुत आग्रह करने लगे, तब वे उसके लिए इसी शर्त पर तैयार हुए कि कॉंग्रेस को चर्खा और खादी को अपनाने का कार्यक्रम स्वीकारना होगा और उसके सदस्यों को खादी पहननी होगी। साथ ही प्रतिदिन एक घंटा चर्खा भी चलाना होगा। सन् 1924 से खादी कॉंग्रेस सदस्यों की पोशाक बन गई, जो आज तक बनी हुई है।

सन् 1926 में जब कॉंग्रेस अध्यक्षता का उनका कार्यकाल समाप्त हो गया, तब उन्होंने एक वर्ष के लिए राजनीतिक मौन धारण कर लिया और साबरमती आश्रम में रहकर 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' पत्र द्वारा ब्रह्मचर्य, बाल विवाह, विधवा विवाह, अछूतोद्धार, हिन्दू–मुस्लिम एकता आदि विषयों पर अपने विचार प्रकट करते रहे।

गांधी जी ने समाज सुधार के रचनात्मक कार्यों के सिलसिले में देश भर में दौरा किया। जहाँ–जहाँ वे गए, वहाँ–वहाँ उन्होंने अस्पृश्यता निवारण, मद्यनिषेध और खादी पर व्याख्यान दिए। किसी–किसी दिन तो वे बीस पच्चीस सभाओं में बोलते थे। एक दिन जब व्याख्यान देकर लौटे, तो बेहोश हो गए। डॉक्टर की सलाह से उन्होंने दो–तीन दिन विश्राम किया और फिर दौरा प्रारंभ कर दिया। दौरे में उनके साथ उनकी अँग्रेज शिष्या मीरा बेन और निजी सचिव (प्राईवेट सेक्रेटरी) महादेव भाई देसाई सदा रहते थे। महादेव भाई उनके इतने निकट थे कि गांधी जी क्या सोच रहे हैं, इसे भाँप लेते थे। मीरा बेन उनकी भोजन और आवास आदि की व्यवस्था करतीं थीं। उन्होंने थोड़ी–बहुत हिंदी सीख ली थी, जिससे वे गाँवों में जाकर लोगों की समस्याओं को समझने की कोशिश करती थीं ।

सभाओं में गांधी जी जब भाषण समाप्त करते, तब झोली फैलाकर दरिद्रनारायण के नाम पर दान माँगा करते और जनता नोटों, रुपयों और पैसों की वर्षा से उनकी झोली भर देती। महिलाएँ तो अपने बहुमूल्य आभूषण तक उनके सामने उतार कर दे देतीं।

गांधी जी प्रत्येक पैसे का हिसाब रखते थे। जो व्यक्ति हिसाब रखने में लापरवाही बरतता, उसे वे क्षमा नहीं करते थे। एक बार दक्षिण भारत से एक कार्यकर्ता उनके पास आया और कहने लगा– "बापू, मैंने जो कुछ चंदा मिला था, उसे ठीक जमा किया है, उसमें से एक पैसा भी नहीं उठाया, फिर भी हिसाब जाँचने वाले ने मुझ पर एक हजार रुपया लेना बताया है। मैं सच कहता हूँ, मैंने कोई गड़बड़ी नहीं की है। अब मैं क्या करूँ ?" गांधी जी ने कहा– "यदि तुमने हिसाब ठीक नहीं रखा है तो मैं क्या करूँ? तुम्हें हजार रुपया भरना होगा।" उसने गिड़गिड़ाकर कहा– "बापू मेरे पास तो घर लौटने के लिए एक कौड़ी भी नहीं है।'' "तो पैदल जाओ। मैं तुम्हें कोई सहायता नहीं दे सकता।"

बापू का स्वभाव फूल–सा कोमल था और बज्र–सा कठोर भी। हिसाब–किताब में या अन्य नैतिक आचरणों में ढिलाई करने वाले के प्रति वे जरा भी दया नहीं दिखलाते थे ।

यात्रा में अधिक परिश्रम के कारण उनका रक्त–चाप बढ़ जाया करता था। इस बार भी जब वे बहुत कमजोर हो गए तो डॉक्टरों की सलाह से विश्राम करने के लिए मैसूर चले गए।

एक दिन जब गांधी जी मैसूर में विश्राम कर रहे थे, तभी एकाएक वायसराय लार्ड इर्विन का पत्र उन्हें मिला जिसमें उन्हें दिल्ली बुलाया गया था। गांधी जी जब दिल्ली गए तो इर्विन ने उन्हें कमरे में बैठाकर एक टाइप किया हुआ पत्र दिया। उसमें लिखा था कि ब्रिटिश सरकार भारत को शासन सुधार की दूसरी किश्त देने के पूर्व परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए एक कमीशन भेजना चाहती है ।

कागज गांधी जी के हाथ में देकर इर्विन उनकी ओर देखने लगे, यह जानने के लिए कि उन पर पत्र का क्या असर हुआ। गांधी जी ने इर्विन की ओर देखकर कहा–"क्या और भी कुछ काम है।" इर्विन ने कहा–"नहीं।"

गांधी जी चुपचाप वायसराय की कोठी से अपने निवासस्थान पर लौट आए। ब्रिटिश सरकार ने जो कमीशन नियुक्त किया था, उसमें एक भी भारतीय सदस्य के रूप में शामिल नहीं किया गया था। काँग्रेस के नेताओं को ऐसा प्रतीत हुआ कि अँग्रेज सरकार की नीयत स्वराज्य देने की नहीं है। वह कमीशन के द्वारा खिलाफ रिपोर्ट प्राप्त कर बात को टाल देना चाहती है।

इस कमीशन का भारत के सभी दलों ने विरोध करने का निश्चय किया। कमीशन के प्रमुख साइमन थे, इसीलिए इसका नाम साइमन कमीशन पड़ा। जब 3 फरवरी, 1928 को वह मुंबई पहुँचा, तब उसे कहीं भी स्वागत के चिह्न नहीं दिखाई दिए। दिखाई दिए साइमन गो बैक (साइमन वापस जाओ) के पोस्टर और सुनाई पड़े 'साइमन गो बैक' शब्द। जो अँग्रेजी नहीं जानते थे, वे भी तीन शब्द सीखकर –'साइमन गो बैक' चिल्लाने लगे। कमीशन जहाँ गया, काले झंडे और विरोधी नारों से उसका स्वागत किया गया। किसी प्रतिष्ठित भारतीय ने उससे भेंट नहीं की। परन्तु पुलिस ने स्थान–स्थान पर विरोध जुलूसों पर लाठियों की वर्षा अवश्य की। लाहौर में विरोध–जुलूस का नेतृत्व करने वाले काँग्रेस नेता लाला लाजपतराय पर भी लाठियों का घातक प्रहार किया गया, जिससे कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में बाल, लाल और पाल की त्रयी मशहूर थी। बाल–बाल गंगाधर तिलक, पाल–विपिन चंद्र पाल और लाल से लाला लाजपतराय का आशय था। सरकार की दमन –नीति से जनता में विक्षोभ की तीव्र लहर फैल गई थी। अतः जनता गांधी जी से पुनः सत्याग्रह आंदोलन की माँग करने लगी।

'चलो बारडोली'

बारडोली में सरकार लगान के कानून में बाईस प्रतिशत की बढ़ोत्तरी करना चाहती थी। किसानों को यह बहुत अधिक लगी। स्थानीय नेताओं ने किसानों की कठिनाई सरकार को समझाने की कोशिश की। परन्तु वह अपने

निर्णय को बदलने के लिए तैयार नहीं हुई। वल्लभ भाई पटेल ने गांधी जी से सत्याग्रह प्रारंभ करने की अनुमति चाही। गांधी जी ने उन्हें लगानबंदी के आंदोलन को प्रारंभ करने की अनुमति दे दी। वल्लभ भाई ने बारडोली तहसील में किसानों को लगान न चुकाने की प्रेरणा दी और किसानों के घर कुर्की जाने लगी। कुर्की करने वाले उनके घर का सामान उठा ले जाते और गाय, ढोर, भैंस भी ले जाते, किन्तु जब सामान या ढोरों की नीलामी बोली जाती, तो कोई खरीददार सामने न आता था। ऐसी दशा में सरकारी कर्मचारी ही चार–छह आने में गाय–भैंस खरीद लेते थे। किसानों के खेत भी इसी प्रकार सस्ते दामों में बेच दिए गए। ज्यों–ज्यों सरकार का दमन बढ़ता जाता, त्यों –त्यों आंदोलन में तेजी बढ़ती जाती। इस आंदोलन की ओर सारे देश का ध्यान खिंच गया। स्थान–स्थान पर सभाएँ होतीं, जिनमें किसानों पर होने वाले अत्याचारों पर भाषण होते थे और 'चलो बारडोली' के नारे लगाए जाते थे। सत्याग्रह को देश भर से सहायता पहुँचने लगी थी। अनुमान है कि सत्तासी हजार किसानों ने लगान न देकर सत्याग्रह में भाग लिया। सत्याग्रह साढ़े तीन महीने तक चलता रहा। सत्याग्रहियों की सहानुभूति में देश भर में 'बारडोली दिवस' मनाया गया। आश्चर्य की बात यह है कि कहीं से भी हिंसा का समाचार प्राप्त नहीं हुआ। जनता के जोश के आगे सरकार झुकी और उसने जाँच कमीशन बैठाकर किसानों के पक्ष में रिपोर्ट प्राप्त कर ली और लगान वृद्धि का कानून रद्द कर दिया। जप्त जमीनें लौटा दी गईं। जो पशु बेच दिए गए थे, उनका मुआवजा दिया गया। सत्याग्रहियों की रिहाई कर दी गई।

सत्याग्रह की यह पूर्ण विजय कही जा सकती है। इसका सफल संचालन करने के कारण जनता ने वल्लभ भाई को सरदार की उपाधि प्रदान की। तभी से वे सरदार वल्लभ भाई पटेल कहलाने लगे। गांधी जी के नेतृत्व में जनता का दुगुना विश्वास बढ़ गया।

बारडोली की सफलता से उत्साहित हो तरुण पीढ़ी गांधी जी से काँग्रेस के पूर्ण स्वातंत्र्य के प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिए किसी प्रभावकारी आंदोलन की माँग करने लगी। देश का वातावरण बहुत क्षुब्ध हो रहा था। हिंसा में विश्वास रखने वाले तरुण रक्त–क्रांति का स्वप्न देख रहे थे। वे देश से अँग्रेजी शासन को समाप्त कर मज़दूर–किसानों का राज्य स्थापित करना चाहते थे। सरकार ने साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित व्यक्तियों को पकड़कर उन पर षड़यंत्र के मुकदमे चलाए। उनमें मेरठ षड़यंत्र केस ने बड़ी प्रसिद्धि पाई। कुछ क्रांतिकारियों ने वायसराय लार्ड इर्विन की स्पेशल ट्रेन को बम से उड़ाने की असफल कोशिश भी की। वे सरकारी खजाने लूटते, शस्त्रागारों पर आक्रमण करते और कथित अत्याचारी अँग्रेज अधिकारियों की सफल–असफल हत्या के प्रयत्न करते। परिणामस्वरूप वे फाँसी के तख्ते पर झूलते अथवा आजन्म कारावास का दंड भोगते थे। रह–रहकर घटित हेाने वाली हिंसा की घटनाओं के कारण गांधी जी किसी देशव्यापी आंदोलन को शीघ्र ही प्रारंभ करने के पक्ष में नहीं थे। परन्तु प्रबल जनमत की बहुत समय तक अवहेलना भी कैसे की जा सकती थी ? इसी बीच इंग्लैंड में मिली–जुली सरकार कायम हो गई थी और मज़दूर दल के नेता मेक्डोनल्ड प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हुए थे। इनकी सहानुभूति भारत के स्वातंत्र्य आंदोलन के पक्ष में थी। इसलिए इन्होंने सर्वदलीय नेताओं को आमंत्रित कर एक गोलमेज परिषद् बुलाने का प्रस्ताव रखा। गांधी जी ने इस बैठक में भाग नहीं लिया। वे देश को संगठित करने के प्रयत्न में लग गए।

विदेशी वस्त्रों की होली

गांधी जी ने इस बार विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलन को प्रमुखता दी । वे अपने प्रत्येक सभा के अंत में विदेशी वस्त्रों को एकत्र कराते और उनमें अपने हाथ से दियासलाई लगाते थे। मुंबई की एक सभा में उन्होने विदेशी वस्त्रों की होली अपने हाथ से जलाई तो उनके भक्त एंड्रूज ने उनसे कहा, ''महात्माजी, आप सुन्दर चीजों को क्यों नष्ट कर रहे हैं? यदि आप इन्हें पसंद नहीं करते तो वस्त्रहीन गरीबों को क्यों नहीं बाँट देते?'' गांधी जी ने हँसते हुए कहा–''चार्ली, तुम नहीं जानते कि मैं यह होली कांड क्यों रचता हूँ। मैं जवानों के जोश को हिंसक कार्यों से हटाने के लिए यह कार्य करता हूँ। इससे उनकी नष्ट करने की प्रवृत्ति संतुष्ट हो जाती है और जिस चीज़ को मैं स्वयं पसंद नहीं करता, उसे दूसरे को कैसे दे सकता हूँ। '' चार्ली गांधी जी के तर्क से संतुष्ट हुए हों या न हुए हों पर वे मुस्कुराकर मौन रह गए।

कोलकाता के श्रद्धानंद पार्क में गांधी जी ने जब जनता से विदेशी वस्त्रों को फेंक देने की बात कही तो चारों ओर से वस्त्र फिकने लगे और उनका विशाल ढेर लग गया। गांधी जी उसमें दियासलाई लगाने ही वाले थे कि पुलिस कमिश्नर सामने आ गया और कहने लगा कि कानून के अनुसार सार्वजनिक पार्क में ऐसे कार्य वर्जित हैं। गांधी जी ने उसकी आपत्ति की कोई परवाह न की, ढेर में दियासलाई लगा ही दी। विदेशी वस्त्र धू–धू जलने लगा। कमिश्नर के आदेश से पुलिस के सिपाहियों ने दौड़कर आग बुझाने की चेष्टा की। कमिश्नर ने स्वयं गांधी जी को कानून भंग के अपराध में गिरफ्तार कर लिया। जब उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया तो उसने एक रुपया जुर्माने की सजा देकर छोड़ दिया।

साम्यवादी आंदोलन के कारण देश के भिन्न–भिन्न स्थानों में मजदूरों की हड़तालें होने लगीं। बंगाल में उनका जब जोर ज्यादा बढ़ा तो बंगाल सरकार ने बिना मुकदमा चलाए कई नेताओं को जेल में डाल दिया। अन्य प्रांतों में भी मज़दूर नेताओं पर बड़ी संख्या में मुकदमे चलाए गए और सजाएँ दी गई। लाहौर में कुछ लड़कों ने 'साम्राज्यवाद का नाश हो,' 'क्रांति जिन्दाबाद', 'टोरी–बच्चा हाय–हाय' आदि के जब नारे लगाए, तो उन्हें बुरी तरह पीटा गया। इन घटनाओं से देश भर में क्षोभ फैल गया। सरकार दिल्ली की असेंबली में देश रक्षा कानून पास करना चाहती थी। इसके अंतर्गत व्यक्तियों को बिना मुकदमा चलाए जेल में रखा जा सकता था। जब यह बिल असेंबली में पेश किया जा रहा था, तभी असेंबली दीर्घा से सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने नीचे बम फेंक दिया और क्रांति के नारे लगाए तथा स्वयं को गिरफ्तार करवा लिया। बाद में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को हिंसा के अन्य मामलों में सजाएँ हुईं। भगतसिंह को फाँसी दी गई और दत्त को आजीवन कारावास। गांधी जी ने भगतसिंह को फाँसी से बचाने का असफल प्रयत्न भी किया था।

देश में स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए आंदोलन कई रूपों में चल रहे थे। दिसम्बर 1929 में लाहौर में रावी तट पर काँग्रेस का अधिवेशन हुआ, जिसमें पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास हुआ। 26 जनवरी, 1930 को देश भर में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। गांधी जी साबरमती लौट गए और उन्होंने नमक कानून तोड़ने के रूप में सत्याग्रह–आंदोलन प्रारंभ करने का निश्चय किया।

दांडी यात्रा

गांधी जी 12 मार्च, 1930 को नमक कानून तोड़ने के लिए चुने हुए आश्रमवासियों के साथ समुद्र के किनारे दांडी नामक स्थान की ओर रवाना हुए। आश्रमवासी स्वयंसेवकों की संख्या अठत्तर थी। प्रस्थान के समय अहमदाबाद की

महिलाओं ने तिलक लगाया, आरती उतारी। गांधी जी के हाथ में लाठी, शरीर पर घुटनों तक की धोती और पैरों में चप्पल थी। वे लंबे–लंबे डग भरते हुए तेजी से चलते थे। पहले ही दिन उन्होंने धूप और सड़क की धूल खाते हुए सोलह किलोमीटर की यात्रा तय कर ली। उनका पहला पड़ाव असलाली गाँव में हुआ, जहाँ सैंकड़ों ग्रामवासियों ने पुष्पहारों और

वाद्य ध्वनियों (बाजे–गाजे) से उनका स्वागत किया। वे हमेशा अपने भाषणों में जनता को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देते थे। यहाँ भी उन्होंने यही किया। इकसठ वर्ष के बूढ़े महात्मा का जोश देखकर नए जवान भी लजा जाते थे। दांडी यात्रा तीर्थ यात्रा के समान लगती थी, जो चौबीस दिनों में पूरी हुई। यह तीन सौ किलोमीटर की यात्रा थी।

यात्रा के दौरान सत्याग्रही प्रातः राब, काँजी अथवा नमकीन मोटी रोटी का नाश्ता कर चल पड़ते थे। दोपहर को पूर्व निश्चित गाँव में भोजन के लिए रुकते थे। दोपहर के भोजन में मोवन डली रोटी, सब्जी, मठा या दूध होता था। रोटी थोड़ी घी से चुपड़ दी जाती थी। भोजन के पश्चात् सत्याग्रही थोड़ा–सा विश्राम करते थे और दिन ढलने के पहले आगे की यात्रा प्रारंभ कर देते थे और अगले किसी ग्राम में रात बिताते थे। रात का भोजन खिचड़ी, सब्जी, दूध या मठा होता था। गांधी जी के भोजन में खजूर, किशमिश, नीबू और बकरी का दूध रहता था। ग्रामवासी बड़े उत्साहपूर्वक गांधी जी और सत्याग्रहियों को भोजन कराते और उनके आराम की चिंता करते थे। चाय और पान आदि का सेवन निषिद्ध था।

प्रत्येक विश्राम के गाँव में महात्मा जी सामूहिक प्रार्थना करते और ग्रामवासियों से छुआछूत को दूर करने तथा भगवान में विश्वास रखने का उपदेश देते थे। कहीं–कहीं ग्रामवासी सरकारी कर्मचारियों को खाने–पीने का सामान न देकर उनका बहिष्कार करते थे।

गांधी जी को जब यह बात ज्ञात हुई तो उन्होंने यहाँ तक कहा, ''जिस डायर ने पंजाब में अनेक अत्याचार किए हैं, वह यदि मुझे गोली मार दे और मैं बेहोशी की हालत में यह सुन लूँ कि उसे जहरीले साँप ने काटा है, तो मैं उसका ज़हर चूसने को दौड़ जाऊँगा।''

गांधी जी की मानवता के आगे शत्रु का भी सिर झुक जाता था। वे किसी को शत्रु मानते ही न थे।

'स्वराज्य सवारी आवी छे'

गांधी जी अपने सत्याग्रही स्वयंसेवकों के साथ जब गाँव से गुजरते थे, तब गुजराती स्त्रियाँ स्वराज्य के गीत गाती थीं –

'आवी छे रे आवी छे, स्वराज्य सवारी आवी छे ।

जयनाद गगन माँ गाजे छे, स्वराज्य सवारी आवी छे ।

(स्वराज्य सवारी आई है, आई है, आकाश में जयनाद गूँज रहा है, स्वराज्य की सवारी आई है।) बापू कहीं–कहीं नंगे पैर चलने लगते थे। इसलिए जनता रास्ते के कंकड़ साफ करती, उन पर पानी छिड़कती और पत्ते बिछाती थी। ऐसा लगता था, मानो कोई ऋषि अपने शिष्यों के साथ तपोभूमि की ओर प्रस्थान कर रहा है।

जब सत्याग्रही 5 अप्रैल की रात को दांडी पहुँचे, तब हजारों स्त्री–पुरुष इकट्ठे हो गए और उन्होंने जागते–जागते रात बिताई। सत्याग्रही प्रातः उठे, उन्होंने प्रार्थना की और समुद्र की लहरों में स्नान किया। गांधी जी ने ठीक 6 बजकर 20 पर समुद्र किनारे के गड्ढे से नमक उठाकर कानून भंग किया। स्वयंसेवकों ने भी उनका अनुकरण किया। पुलिस खड़ी–खड़ी तमाशा देखती रही। उसने गांधी जी को गिरफ्तार नहीं किया।

गांधी जी के नमक कानून तोड़ने का समाचार ज्योंही देश भर में फैला, त्यों ही स्थान–स्थान पर नमक सत्याग्रह प्रारंभ हो गया। कई स्थानों पर सरकार ने सत्याग्रहियों को लाठी से पीटा और गोलियों से भी भूना। देश–भर में गिरफ्तारियों का ताँता बँध गया, परन्तु जनता का उत्साह कम होने की बजाय बढ़ता ही गया।

जब गांधी जी को दांडी में नहीं पकड़ा गया तो उन्होंने धरासणा के नमक भंडारों पर धरने की तैयारी की और अपने स्वयंसेवकों को वहाँ भेज दिया। गांधी जी को सरकार ने धरासणा नहीं जाने दिया। जाने के पूर्व ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

जब सत्याग्रही धरासणा नमक भंडार पर पहुँचे तो पुलिस ने उन पर क्रूरता से लाठी प्रहार किया। उन्हें ठोकर मार–मारकर भगाने की कोशिश की। परन्तु सत्याग्रही शांति से प्रहार सहते रहे और अपने स्थान से जरा भी नहीं डिगे। देश भर में लाखों की संख्या में स्त्री–पुरुष जेल गए। जब सरकार ने देखा कि उसका काम–काज ठप्प होने को है तो वह झुकी और वायसराय ने यरवदा जेल से गांधी जी को आमंत्रित किया। देश के प्रमुख नेता भी उसी समय छोड़ दिए गए। वायसराय ने काँग्रेस से समझौता किया। समझौते के अनुसार नमक कानून रद्द करने और सभी सत्याग्रहियों को छोड़ने के लिए सरकार राजी हो गई।

अनुदार दल के प्रतिनिधि मिस्टर चर्चिल ने इंग्लैंड में इस समझौते के विरुद्ध पार्लियामेंट में आवाज़ उठाई। उसने जोश के साथ कहा, ''यह बागी फकीर, अधनंगा गांधी वायसराय की कोठी पर जाता है और ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि वायसराय से बराबरी की हैसियत से समझौता करता है। इसे मै बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकता।''

समझौते के बाद सत्याग्रही छोड़ दिए गए तो गांधी जी ने भी सत्याग्रह स्थगित कर दिया।

लंदन में सरकार ने पुनः गोलमेज परिषद् आयोजित की जिसमें गांधी जी और देश के कुछ नेता आमंत्रित किए गए। गांधी जी काँग्रेस प्रतिनिधि के रूप में लंदन गए और उसी नंगे फकीर के वेश में। जनता उन्हें कौतूहल से देखती थी। वे कड़ाके की सर्दी में खादी की शाल ओढ़े, चप्पल पहने हुए तेजी से प्रातः जब घूमने निकलते तो एक दृश्य–सा बन जाता।

लड़के–लड़कियाँ चीख उठते–"बाप रे बाप! इतनी कड़ी ठंड में यह बूढ़ा कैसे जिंदा रहेगा? गर्म कपड़े क्यों नहीं पहनता? अरे गांधी, तुम्हारी पैंट कहाँ है।" वे जिस सड़क से निकलते, भीड़ उनके पीछे लग जाती। गांधी जी लंदन में तीन महीने रहे और जनता को अपने सादे जीवन से आकर्षित करते रहे। वे उसे भारत की स्थिति और उसकी स्वाधीनता की माँग समझाते रहे।

गोलमेज परिषद् की समाप्ति पर सम्राट जार्ज ने प्रतिनिधियों से मिलने की इच्छा प्रकट की। लोगों ने गांधी जी को अपनी पोशाक बदलने की सलाह दी, परन्तु उन्होंने कहा, ''मैं सम्राट से मिलना छोड़ सकता हूँ, अपनी पोशाक नहीं।'' अतः वे अपनी खादी की ही पोशाक में सम्राट के महल में गए और उनसे हाथ मिलाया और अपनी सीधी–सादी भाषा में भारत की स्थिति पर दो शब्द कहे।

गांधी जी ने मुंबई पहुँचते ही सरकार द्वारा पुनः दमन चक्र चलाने के समाचार सुने। पुराने वायसराय इर्विन के स्थान पर नए वायसराय लार्ड विलिंगटन की नियुक्ति हो गई थी। ये गांधी विरोधी थे। इन्होंने 'गांधी इर्विन समझौते' को तोड़ने की क्रिया प्रारंभ कर दी और 4 फरवरी, 1932 को पुनः गांधी जी को पकड़कर यरवदा जेल में बंद कर दिया। वहाँ गांधी जी ने अपना दैनिक कार्यक्रम जारी रखा। वे चरखा कातते, प्रार्थना करते और विविध विषयों का अध्ययन करते। स्वावलंबी होने के कारण वे अपने कपड़े स्वयं धोते थे।

ब्रिटिश सरकार ने भारत के आंदोलन को शांत करने की दृष्टि से नया संविधान तैयार किया, जिसमें विधान सभा में हिन्दू, मुसलमानों के पृथक निर्वाचन का विधान था। गांधी जी को अँग्रेजों की विभाजन नीति से बड़ी वेदना हुई। सरकार हरिजनों को हिन्दू समाज से पृथक करना चाहती थी। यह गांधी जी के लिए असह्य बात थी। उसे दूर कराने के लिए गांधी जी को एक ही उपाय सूझ पड़ा और वह था आमरण उपवास। गांधी जी ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री को लिखा कि संविधान में से हरिजनों के पृथक निर्वाचन का जो विधान रखा गया है, उसे निकाल दिया जाना चाहिए, क्योंकि इससे हिन्दू समाज खंडित हो जाएगा। सरकार ने जब गांधी जी की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया तो उन्होंने आमरण उपवास प्रारंभ कर दिया। गांधी जी ने कहा– "मैं ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नहीं हूँ । मैं हिन्दू समाज को जागृत करने की दृष्टि से अपने प्राणों की आहुति देना चाहता हूँ।" जिस दिन गांधी जी ने उपवास किया, उस दिन देश के लाखों लोगों ने उपवास रखा था। नेताओं ने हरिजनों के प्रतिनिधि डॉक्टर अम्बेडकर को समझा–बुझाकर उनसे पृथक निर्वाचन अमान्य करवा दिया। उसकी सूचना ब्रिटिश सरकार को भेज दी गई,। गांधी जी उपवास से काफी दुर्बल हो गए थे। क्षण–क्षण उनकी हालत गिरती जा रही थी। ब्रिटिश सरकार पर गांधी जी के अँग्रेज मित्र दबाव डाल रहे थे। ब्रिटिश सरकार भी उन्हें जेल में मरने नहीं देना चाहती थी। उसने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उन्हें जेल से छोड़ दिया।

जेल से छूटने के बाद से द्वितीय महायुद्ध आरंभ होने तक गांधी जी सक्रिय राजनीति से अलग रहे। उन्होंने ग्रामसुधार, हरिजनोद्धार, नई तालीम (बुनियादी शिक्षा) आदि रचनात्मक कार्यों में योगदान जारी रखा।

ग्राम सुधार

कहा जाता है और ठीक कहा जाता है कि भारतवर्ष ग्रामों में बसा है। गांधी जी जब इंग्लैंड में थे, तब किसी ने उनसे पूछा, 'मैं भारत की सेवा करना चाहता हूँ। आप बतलाइए मैं क्या करूँ?' गांधी जी ने तुरंत कहा–'गाँव में जाओ; वहाँ की गंदगी दूर करो; लोगों को सफाई से रहना सिखलाओ और उन्हें आत्म–निर्भर बनाओ।''

गांधी जी भारत में एक आदर्श ग्राम का निर्माण करना चाहते थे। वर्धा के सेठ जमुना लाल बजाज उनके अनन्य भक्त थे। गांधी जी उनको पुत्र के समान मानते थे। उन्होंने गांधी जी से वर्धा के पास सेगाँव को आदर्श गाँव बनाने की प्रार्थना की। गांधी जी अपनी अँग्रेज शिष्या मीरा बेन के साथ जब सेगाँव गए तो उन्होंने देखा कि वास्तव में वह बहुत पिछड़ा

हुआ है। लोग स्वच्छता का नाम भी नहीं जानते। अज्ञान के कारण आधी से अधिक जनसंख्या किसी–न–किसी रोग से बीमार रहती है। उन्होंने से गाँव में रहना स्वीकार कर लिया। उनके लिए घास–बाँस, लकड़ी और मिट्टी से एक छोटी सी कुटिया भी बना दी गई। उसी के आस–पास उनके साथियों के रहने के लिए दूसरी कुटिया भी बना दी गई,। गांधी जी ग्रामीणों के समान ही गर्मी–सर्दी का दुख–सुख भोगना चाहते थे। उन्हीं के समान जीवन व्यतीत करना चाहते थे।

गांधी जी ने वहाँ पहुँचने के बाद गाँव की गंदगी दूर करने का कार्यक्रम हाथ में ले लिया। वे स्वयं अपने साथियों के साथ गाँव की सफाई में योगदान करते थे। उनके आश्रम में रहने वालों को अपना काम स्वयं करना पड़ता था। उन्हें अपने हाथ से भोजन बनाना, बर्तन साफ करना, कपड़े धोना और मैला भी साफ करना पड़ता था। आश्रमवासियों के लिए ये कार्य अनिवार्य थे। जो व्यक्ति आश्रम में रहना चाहता था उसको तभी रहने की अनुमति मिलती थी, जब वह पाखाना साफ करने के लिए तैयार होता था। सेगाँव का नाम बाद में सेवाग्राम हो गया।

आश्रम में गांधी जी की दिनचर्या अखंडित और निश्चित रहती थी। वे प्रतिदिन तीन बजे उठते, संसार भर से प्राप्त चिट्ठियों का यथासंभव सार रूप में उत्तर देते और चार बजे के लगभग प्रार्थना कर खुली हवा में टहलने के लिए निकल जाते थे। बहुत से दर्शनार्थी और प्रश्नोत्तरार्थी टहलते समय साथ हो लिया करते थे। इससे उनका बहुत–सा समय बच जाता था। वे समय का बहुत ध्यान रखते थे।

टहलकर लौट आने के पश्चात् वे मालिश कराते और टब में स्नान करते थे। उसके बाद खजूर या किसी एक फल के साथ बकरी का दूध लेकर नाश्ता करते थे। नाश्ता करने के बाद चरखा चलाते और तत्पश्चात् आश्रम में बीमार लोगों की सेवा करने पहुँच जाते। वे रोगियों की प्राकृतिक प्रणाली में चिकित्सा करते थे, भोजन में फलादि देते और जरूरत पड़ने पर उपवास भी कराते थे। प्राकृतिक चिकित्सा में उनका अटूट विश्वास था और औषधियों में उनका अटूट अविश्वास। उन्हें किसी भी रोग से भय नहीं लगता था। वे कोढ़ियों की सेवा भी बड़ी प्रसन्नता से करते थे। एक विद्वान, श्री परचुरे शास्त्री, जिन्हें कोढ़ हो गया था, आश्रम में रहते थे। गांधी जी ने उनकी सेवा का भार अपने ऊपर ले लिया था। वे उनके घावों को धोते, शरीर में मालिश करते और अन्य उपचार करते थे। आश्रम निवासी बीमार हो जाने पर गांधी जी से चिकित्सा कराने को उत्सुक रहते थे, क्योंकि इससे उन्हें उनके नजदीक आने में सुविधा हो जाती थी और गांधी जी को भी प्रसन्नता होती थी।

गांधी जी आदर्श ग्राम की कल्पना करते थे। उनका आग्रह था कि आदर्श ग्राम में ग्राम–वासियों को अपने अनाज तैयार कर भोजन की

और कपास बोकर वस्त्र की समस्या हल कर लेना चाहिए। पशुओं के लिए चारागाह होना चाहिए। बच्चों के लिए खेल का मैदान और मनोरंजन के लिये कोई स्थान सुरक्षित रखना चाहिए। यदि गाँवों के साथ अधिक खेल जमीन लगी हो तो उसमें ऐसी फसल उगाई जाए, जिससे अन्न हो सके। परन्तु तम्बाकू, अफीम आदि स्वास्थ्यनाशक वस्तुएँ न उगाई जाएँ। गाँव में एक थियेटर, स्कूल और सार्वजनिक हॉल की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

गाँव के हर काम सहकारी सिद्धांत पर हों यानी लोगों को मिल–जुलकर काम करना चाहिए। गाँव को आधुनिक बनाने के लिए बिजली घर की स्थापना की जा सकती है ।

आदर्श ग्राम में अराजकता नहीं होगी। लोग कानून व्यवस्था का आदर करेंगे। अपराधियों को शरीर का दंड न देकर उनके भीतर संस्कार को सुधारने की कोशिश की जाएगी। लोग सादा जीवन व्यतीत करेंगे। गांधी जी आदर्श ग्राम में अपने जीवन सिद्धांतों को प्रतिबिंबित देखना चाहते थे।

गांधी जी के शिक्षा संबंधी विचार

गांधी जी उद्योगी शिक्षा के पक्षपाती थे जो छात्रों को आत्मनिर्भर बनाती है। उन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित आदर्श स्थिर किए थे:–

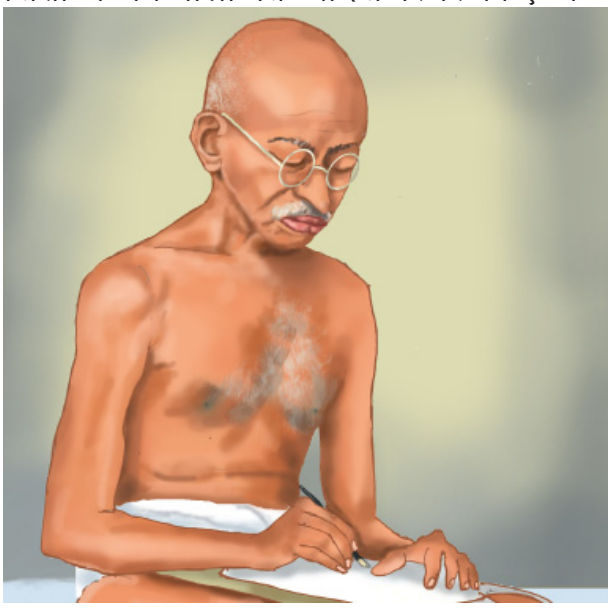

1. शिक्षक की देख–रेख में शिक्षार्थियों को शारीरिक कार्य में लगना चाहिए।

2. प्रत्येक लड़के और लड़की की रुचि जानकर उसे उसकी रुचि का काम देना चाहिए।

3. समझने की योग्यता हो जाने पर अक्षर ज्ञान के पूर्व सामान्य ज्ञान कराना चाहिए।

4. उसे प्रारंभ से शुद्ध अक्षर लिखना सिखाना चाहिए।

5. लिखने के पहले बच्चे को पढ़ना सिखाना चाहिए।

6. बच्चों को बातचीत द्वारा ज्ञान प्राप्त कराया जाए अर्थात् शिक्षक ज्ञान की बातें बोलकर विद्यार्थियों को समझाने की कोशिश करें।

7. बच्चों को जबर्दस्ती कुछ न सिखाया जाए। वे जो पढ़ें उसमें उन्हें आनंद आना चाहिए।

8. शिक्षा खेल के समान लगनी चाहिए। खेल भी शिक्षा का एक अंग है ।

9. शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाए।

10. अक्षर ज्ञान के पहले बच्चों को राष्ट्रभाषा हिन्दी की इतनी शिक्षा दी जाए कि वे उसे बोल समझ सकें।

11. धार्मिक शिक्षा अनिवार्य हो, पर यह पुस्तक से नहीं, शिक्षक के आचरण और उसके मुख से दी जानी चाहिए।

12. सोलह वर्ष की आयु के बाद शिक्षा का दूसरा काल प्रारंभ होता है । हिन्दू बालक को संस्कृत का और मुसलमान बालक को अरबी का ज्ञान दिया जाना चाहिए। शारीरिक कार्य के साथ–साथ अक्षर ज्ञान बढ़ाया जाए।

13. बालक को माता–पिता के धंधे की शिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे वह अपने पारिवारिक धंधे को अपना सके।

14. सोलह वर्ष तक के लड़के–लड़कियों को दुनिया के इतिहास, भूगोल, वनस्पति शास्त्र, गणित, ज्यामिती और बीजगणित का ज्ञान हो जाना चाहिए। लड़कियों को रसोई बनाने और सीने–पिरोने का भी ज्ञान कराया जाए।

15. नौ वर्ष के बाद शुरू होने वाली शिक्षा स्वावलंबी होनी चाहिए अर्थात् विद्यार्थी पढ़ते समय ऐसा उद्योग करे, जिससे पढ़ाई का खर्च निकल जाए। शिक्षकों में सेवावृत्ति होनी चाहिए। वे चरित्रवान हों। अँग्रेजी पढ़ाई भाषा के रूप में हो सकती है। उसे पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिए, पर उसका अनिवार्य रहना आवश्यक नहीं है।

बुनियादी शिक्षा : नई तालीम

महात्मा जी प्रचलित शिक्षा प्रणाली से संतुष्ट नहीं थे। वे आदर्श शिक्षा उसे मानते थे जिसके द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक विकास हो। वे बच्चों को हस्त कौशल की शिक्षा देने पर अधिक बल देते थे, क्योंकि उसके जरिए बच्चा कई विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। उनका कहना था कि यदि बच्चा कताई का काम सीख ले तो वह चरखे की बनावट, उसके चक्के और नली को देखकर ज्यामिती के वर्ग, वृत्त तथा रेखाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेगा। उसको लकड़ी और कपास की पैदावारी की सारी बातें मालूम हो जाएँगी। उसमें कौतूहल जाग जाने से वह प्रत्येक बनाई जाने वाली चीज़ के माध्यम से भूगोल, इतिहास आदि का भी ज्ञान प्राप्त कर लेगा। अफ्रीका में गांधी जी दस्तकारी के माध्यम से बच्चों को विविध विषयों का ज्ञान करा चुके थे। भारत लौटकर उन्होंने अपने साबरमती आश्रम में बच्चों को अपने सिद्धांतों के अनुसार बुनियादी शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया था। इस शिक्षा से गांधी जी दो उद्देश्य पूरा करना चाहते थे–

1. बच्चा अपनी कमाई से फीस चुका सके और
2. उसके शरीर, मन और आत्मा का पूर्ण विकास हो सके।

गांधी जी का यह मत था कि नई तालीम की पद्धति से शिक्षक भी अपना वेतन अर्जित कर सकता है। उसका आदर्श यह होना चाहिए कि पढ़ने और पढ़ाने का वातावरण ही न रहे। यदि कोई पूछे कि लड़के क्या कर रहे हैं तो यह कहा जाए कि खेत में काम कर रहे हैं या रोगी की सेवा कर रहे हैं या सफाई कर रहे हैं आदि। इन सब कार्यों से वे ज्ञान ही तो प्राप्त करते हैं। गांधी जी किताबी ज्ञान की अपेक्षा अपने अनुभव से प्राप्त ज्ञान को अधिक महत्व देते थे। बड़ी आयु के विद्यार्थियों को वे रचनात्मक कार्य में लगाना चाहते थे। उनका मत था कि राजनीति का अध्ययन तो करें पर राजनीतिज्ञों की दलदली नीतियों के शिकार न हों। उन्हें हरिजन तथा आदिवासी आदि पिछड़ी जातियों के सुधार संबंधी कार्यों में सहयोग देना चाहिए। ग्राम की स्वच्छता और उनकी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग देना उनका कर्त्तव्य होना चाहिए।

हरिजनोद्धार यात्रा

गांधी जी ने दक्षिण में हरिजनों के प्रति विशेष अलगाव का भाव होने से यात्राएँ प्रारंभ कीं। मछलीपट्टम की सड़कों पर हरिजनों को आज़ादी से चलने की मनाही सरकार द्वारा नहीं, उच्च वर्णियों द्वारा की गई थी। गांधी जी उनकी दयनीय दशा पर बड़े दुखी थे। वहाँ सभा में अपनी व्यथा को शब्दों में उड़ेलते हुए बोले–''यदि हमने अपने समाज से अस्पृश्यता (छुआछूत) समाप्त न की तो हम अपनी कब्र स्वयं खोदेंगे।'' भाषण की समाप्ति पर उन्होंने तीन मंदिरों को हरिजनों के लिए खुलवा दिया। दक्षिण में हरिजनों को मंदिरों में जाकर मूर्ति के दर्शन की सुविधा तो थी ही नहीं, वे मंदिर को जाने वाली सड़कों पर भी चल नहीं पाते थे। कहीं–कहीं उन्हें डंडा पीटकर अपने अशुभागमन की सूचना देनी पड़ती थी, जिससे ऊँची जाति वाले लोग उनकी छाया से दूर रह सकें। चेन्नई (मद्रास) ही नहीं, भारत के अन्य प्रदेशों में भी, उनके साथ समानता का व्यवहार नहीं किया जाता था। गांधी मानव समानता में विश्वास रखते थे इसलिए वे जाति प्रथा के बहुत विरोधी थे और छुआछूत को हिन्दू समाज का कलंक मानते थे। गांधी जी की हरिजनोद्धार –यात्रा का परिणाम यह हुआ कि देश भर के

कई मंदिर उनके लिए खुल गए और उनके प्रति अलगाव के भाव भी कम हो गए।

नए सुधार और काँग्रेस का सहयोग

गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन में सहयोग देकर हिन्दू और मुसलमानो को नज़दीक लाने का जो प्रयत्न किया था, वह असफल हो गया। मिस्टर जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने आबादी के आधार पर मुस्लिम बहुल प्रांतों से एक पृथक राष्ट्र की माँग पेश कर दी और अपने प्रस्तावित राष्ट्र का नाम 'पाकिस्तान' रखा। धर्म के आधार पर राष्ट्रों के निर्माण का विचार गांधी जी को अटपटा लगा। उनका मत था कि भिन्न धर्मों का अर्थ भिन्न राष्ट्रीयता या संस्कृति नहीं होता। परन्तु मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान बनाए जाने के संबंध में आंदोलन जारी रखा।

द्वितीय महायुद्ध और भारत

1 सितम्बर, 1939 को जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने पोलैंड पर एकाएक हमला कर द्वितीय महायुद्ध का बिगुल बजा दिया। इटली का तानाशाह मुसोलिनी उसके साथ हो गया। हिटलर ने ज्यों ही पोलैंड के शहरों पर बम वर्षा प्रारंभ की त्यों ही इंग्लैंड और फ्रांस ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

भारत के वायसराय ने रेडियो पर कहा –'वी आर एट वार विद् जर्मनी (हम जर्मनी से युद्ध कर रहे हैं।)' भारत को युद्ध कार्य में सहायता देने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।' काँग्रेस को वायसराय की घोषणा में 'हम' शब्द के प्रयोग से आपत्ति थी। युद्ध में उतरने से पहले ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों से कब सलाह ली थी? काँग्रेस ने अँग्रेज सरकार को तभी सहायता देने की इच्छा प्रकट की, जब वह भारत को स्वतंत्र कर दे। सरकार काँग्रेस की शर्त मानने के लिए तैयार नहीं थी, अतः काँग्रेस ने सरकार को युद्ध में सहायता देने से इंकार कर दिया और अपने सभी प्रांतों के मंत्रिमंडलों से त्यागपत्र दिलवा दिया। अब मुस्लिम लीग सरकार की विशेष कृपापात्र बन गई।

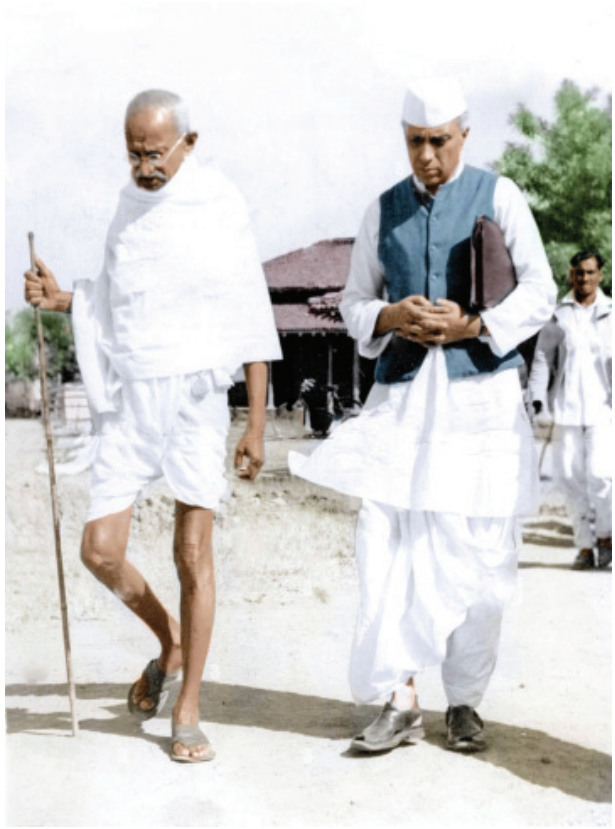

गांधी जी अँग्रेजों को संकट में फँसा देखकर उनके आगे कोई शर्त नहीं रखना चाहते थे। युद्धकाल में वे स्वतंत्रता की माँग पेश करने में एक प्रकार की हिंसा देखते थे। काँग्रेस के बहुत से नेता उनकी अहिंसा की इतनी सूक्ष्म व्याख्या को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे।

उस समय चर्चिल ब्रिटिश सरकार में प्रधान मंत्री थे। वे गांधी जी और भारत के स्वाधीनता–आंदोलन के घोर विरोधी थे।

यद्यपि गांधी जी युद्ध के समय सत्याग्रह के समान किसी आंदोलन को प्रारंभ करने के पक्ष में नहीं थे, परन्तु स्वाधीनता के लिए छटपटाने वाली जनता के मत को ठुकराना भी उनके लिए कठिन था। अतः उन्होंने छोटे पैमाने पर व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया। उन्होंने जन समूहों को नहीं, अपने द्वारा चुने हुए काँग्रेस नेताओं को ही सत्याग्रह करने का आदेश दिया। आचार्य विनोबा भावे प्रथम और पंडित जवाहर लाल दूसरे सत्याग्रही थे। उस समय सभाई नारा था–नहीं भाई, नहीं पाई। इसका अर्थ यह था कि कोई भी भारतीय पलटन में भर्ती नहीं

होगा और युद्ध के कार्यों में एक पाई की भी सहायता नहीं देगा। देश में लगभग चौबीस हजार काँग्रेस नेता युद्ध विरोधी भाषण देने के अपराध में जेल में बंद कर दिए गए, पर जापान के आक्रमण के भय से सन् 1941 में उन्हें छोड़ दिया गया।

सन् 1941 के अंत में युद्ध ने भीषण रूप धारण कर लिया। जापान भी उसमें कूद पड़ा और तेजी के साथ दक्षिण पूर्व एशिया के देशों को हराता हुआ, आगे बढ़ा आ रहा था। यह भय होने लगा कि हिन्दुस्तान पर आक्रमण कर उसे भी न निगल जाए। अमेरिका और रूस भी मित्रराष्ट्र अँग्रेज और फ्रांस के साथ होकर जर्मनी और जापान से लड़ने लगे ।

अमेरिका की सहानुभूति भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रति प्रारंभ से रही थी। युद्धकालीन अमरीकी प्रेसिडेंट रूजवेल्ट ने चर्चिल से आग्रह किया कि वे भारतीयों को स्वाधीन कर दें। इंग्लैंड का जनमत भी भारत के पक्ष में था। लाचार होकर चर्चिल ने सर स्टैफर्ड क्रिप्स को भारतीय नेताओं से भावी सुधारों के संबंध में चर्चा करने के लिए भेजा। क्रिप्स औपनिवेशिक स्वराज्य का प्रस्ताव लेकर आए। उन्होंने नेताओं से स्पष्ट कहा कि युद्ध के पश्चात् ही औपनिवेशिक स्वराज्य दिया जा सकता है। औपनिवेशिक स्वराज्य का जो मसौदा वे लाए थे, उसमें प्रांतों को पृथक हो सकने की स्वतंत्रता थी। इस प्रकार के स्वराज्य से देश के कई टुकड़े हो जाने की संभावना थी। गांधी जी को क्रिप्स का प्रस्ताव मान्य नहीं हुआ। काँग्रेस ने भी उसे ठुकरा दिया। चर्चिल पर रूजवेल्ट का बहुत अधिक दबाव होने के कारण उसने अपने मंत्री क्रिप्स को स्वाधीनता का निकम्मा प्रस्ताव लेकर भेजा था। वह जानता था कि भारतीय नेता उसे ठुकरा देंगे।

जापान की आक्रामक गति तेजी पकड़ती जा रही थी। वह म्यांमार (बर्मा) की ओर बढ़ रहा था। गांधी जी चाहते थे कि यदि भारत स्वाधीन हो जाता है तो वह शत्रु का खुलकर मुकाबला करेगा। अतः उन्होने पुनः सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ करने का निश्चय किया।

'भारत छोड़ो आंदोलन और गांधी जी'

अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी ने अपनी सात–आठ अगस्त 1942 की मुंबई में होने वाली बैठक में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए सत्याग्रह– आंदोलन प्रारंभ करने का प्रस्ताव पास कर दिया। गांधी जी ने भावपूर्ण भाषा में काँग्रेस प्रतिनिधियों से कहा कि अब करने या मरने का समय आ गया है। हमें अँग्रेजों से भारत छोड़ने के लिए कहना पड़ रहा है। वर्तमान स्थिति में यही एक विकल्प रह गया है। गांधी जी आंदोलन प्रारंभ करने के पूर्व वायसराय को विस्तार के साथ उसके संबंध में पत्र लिखना चाहते थे परन्तु सरकार ने उन्हें तथा उनके साथियों को 9 अगस्त को प्रातः पकड़कर यरवदा जेल भेज दिया। फिर वे आगा खाँ महल में रखे गए। उनकी गिरफ्तारी के बाद ही देश भर में धरपकड़ शुरू हो गई। नेताओं के जेल में बंद हो जाने के कारण सत्याग्रह का अहिंसात्मक रूप समाप्त हो गया। देश भर में हिंसा के कार्य होने लगे। रेल की पटरियाँ उखाड़ी जाने लगीं। टेलिफोन के तार काटे जाने लगे और सरकारी खजाने लूटे जाने लगे तथा सरकारी कर्मचारियों, विशेष कर पुलिस कर्मचारियों पर आक्रमण होने लगे। इसी प्रकार के अराजक और हिंसक कार्य छिपकर और खुलकर होने लगे। देश के कई स्थानों पर ऐसी परिस्थिति पैदा हो गईं मानो अँग्रेजी राज्य समाप्त हो गया हो।

गांधी जी का हिंसा के कार्यों से सदा विरोध रहा परन्तु अँग्रेज सरकार इन कार्यों के लिए बराबर गांधी जी को ही जिम्मेदार ठहराती रही। चर्चिल किसी प्रकार गांधी जी को जापानियों से साँठ–गाँठ होने के अभियोग में फाँसकर भयंकर दंड देना चाहता था, परन्तु उसे बहुत छानबीन कराने पर भी उनके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिला। गांधी जी ने वायसराय को लिखे लंबे पत्रों में देश में होने वाले हिंसा के कार्यों के लिए अपने को कतई जिम्मेदार नहीं माना। उन्होंने इसकी जिम्मेदारी सरकार पर ही डाली।

उन्होंने लिखा कि आंदोलन के संचालित करने के पूर्व ही जब मुझे पकड़ लिया गया, तब मैं देश में होने वाली हिंसा की घटनाओं के लिए कैसे जिम्मेदार हो सकता हूँ ? फिर आत्मशुद्धि

की दृष्टि से गांधी जी ने उपवास प्रारंभ कर दिया, जिससे जनता हिंसा के कार्यों को रोक दे। वायसराय लार्ड लिनलिथगो गांधी जी को छोड़ना चाहते थे क्योंकि उनकी हालत, उपवास के कारण, बहुत खराब होती जा रही थी। उपवास की अवधि में कई क्षण ऐसे आए जब उनकी मृत्यु होने में डॉक्टरों को भी संदेह नहीं रहा परन्तु उन्होंने अपने आत्मबल से संकट के क्षण टाल दिए और उपवास समाप्त हुआ। धीरे–धीरे वे स्वस्थ हो गए। एक दिन अचानक उनके निजी सचिव महादेव भाई देसाई की मृत्यु हो गई। आगा खाँ महल में, जहाँ नेता बंदी थे, शोक छा गया। गांधी जी प्रतिदिन प्रातः देसाई के दाह संस्कार के स्थान पर जाते, फूल चढ़ाते और गीता का पाठ करते थे। वहाँ एक पत्थर गाड़ा गया जिस पर मीरा बेन ने ओम के साथ–साथ मुस्लिम और ईसाई चिन्ह भी अंकित किए।

महादेव भाई के स्वर्गवास के बाद आगा खाँ महल को एक और मृत्यु का अभिशाप झेलना पड़ा। वह था कस्तूर बा की मृत्यु 22 फरवरी, 1944 को। कस्तूर बा ने गांधी जी की गोद में अंतिम साँस ली। उन्होंने मृत्यु के कुछ क्षण पूर्व यह इच्छा प्रकट की थी कि मेरा दाह–कर्म गांधी जी द्वारा तैयार की गई खादी की साड़ी के साथ किया जाए। महादेव भाई की दाह–भूमि के पास ही बा का दाह संस्कार वैदिक मंत्रों की ध्वनियों के साथ संपन्न हुआ।

महादेव भाई और कस्तूर बा की मृत्यु के पश्चात् गांधी जी अपने को एकाकी अनुभव करने लगे और थोड़े ही समय में दो बार मलेरिया और पेट की बीमारी से जब बहुत अधिक दुर्बल हो गए तो सरकार ने उनकी मृत्यु की आशंका से उन्हें 6 मई 1944 को जेल से छोड़ दिया। उनके साथ ही अन्य प्रमुख नेता भी छोड़ दिए गए ।

जेल से छूटने के बाद गांधी जी ने मुंबई के जुहू नामक स्थान में थोड़ा विश्राम किया परन्तु जनता जनार्दन की सेवा के बिना उन्हें आंतरिक विश्राम नहीं मिलता था। सन् 1943 में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा था। अनुमान है कि पन्द्रह लाख से अधिक लोगों ने भूख–भूख चिल्लाकर अपने प्राण दिए थे। बंगाल के शहरों के गोदामों में सैकड़ों मन अनाज भरा पड़ा था पर वह सरकार की निर्दय नीति के कारण लोगों के मुँह में नहीं जा पाता था। उस समय गांधी जी जेल में थे। बंगाल की पीड़ित जनता की करुण गाथाएँ सुन–सुनकर वे व्याकुल हो उठते थे। जेल से उन्होंने वायसराय को अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए कई पत्र लिखे, परन्तु उनका कोई परिणाम नहीं निकला।

बंगाल की यात्रा

स्वास्थ्य जब जरा सँभल गया तो उन्होंने पुनः तत्कालीन वायसराय लार्ड वेवेल को पत्र लिखकर बंगाल जाने की अनुमति चाही। लार्ड वेवेल फौजी आदमी था, उसके मन में गांधी जी के प्रति आदर का भाव नहीं था। वह सोचने लगा, 'गांधी जनता की सेवा के बहाने लोगों को भड़काने और काँग्रेस का प्रचार करने जा रहा है।' बंगाल के गवर्नर का नाम था कैसी। उसके मन में गांधी जी के प्रति आदर का भाव था परन्तु वह वायसराय की इच्छा के प्रतिकूल स्वयं निर्णय नहीं ले सकता था क्योंकि वेवेल ने गांधी जी के पत्र के उत्तर में उन्हें बंगाल जाने

की मनाही कर दी थी।

सन् 1945 में द्वितीय महायुद्ध समाप्त हो गया। इंग्लैंड में चुनाव हुए भारत का विरोधी चर्चिल, चुनाव में हार गया और उसके स्थान पर मजदूर दल के शांतिप्रिय नेता लार्ड एटली की सरकार बनी।

अब गांधी जी को बंगाल जाने की अनुमति प्राप्त हो गई। जब वे कोलकाता पहुँचे तो उन्होंने गवर्नर कैसी से भेंट की। वह गांधी जी की सत्यवादिता और देशभक्ति पर मुग्ध था। उसने उन्हें बंगाल में उनकी इच्छा के अनुसार कहीं भी जाने की स्वतंत्रता दे दी।

गांधी जी ने बंगाल की यात्रा से अनुभव किया कि प्रांत में भ्रष्टाचार, कालाबाजारी और मुनाफाखोरी का बोलबाला है। गांधी जी बंगाल के कई गाँवों में गए और जनता की कष्ट गाथाएँ सुनकर उन्हें दूर करने का आश्वासन देते रहे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि गवर्नर भला आदमी है। लेकिन उसका ध्यान किसी खास बात की ओर आकर्षित किया जाएगा तो अवश्य उस पर कार्यवाही करेगा। गांधी जी छह सप्ताह बंगाल में रहे और जो कुछ उनसे जनता की सहायता के लिए हो सका, उन्होंने किया।

बंगाल से गांधी जी चेन्नई (मद्रास) गए और वहाँ उन्होंने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता की। गांधी जी ने जब हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया, तब उन्हें दक्षिण भारत में उसके प्रचार की आवश्यकता अनुभव हुई। उन्होंने उत्तर भारत के कुछ उत्साही हिन्दी प्रेमियों के साथ अपने पुत्र देवदास गांधी को चेन्नई (मद्रास) भेजकर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की । इस सभा ने दक्षिण में हिन्दी का प्रचार कार्य अपने हाथ में ले लिया और लाखों स्त्री–पुरुषों को हिन्दी सिखाई और आज भी सिखा रही है। गांधी जी के स्वभाव की यह विशेषता रही है कि वे सभाओं में अपने विचार प्रकट कर चुप नहीं रह जाते थे, उन्हें कार्य रूप में परिणत करने के लिए जी जान से जुट जाते थे।

इस बीच एटली की सरकार ने भारत को स्वाधीन करने का निश्चय कर लिया और उसके लिए उसने मंत्रिपरिषद् के तीन प्रतिनिधि भारत भेजे। उनमें सर क्रिप्स, पैथिक लारेंस और अलेक्जेंडर थे। सर क्रिप्स पहले भी चर्चिल के कार्यकाल में औपनिवेशिक स्वराज्य का मसौदा लेकर आए थे और गांधी जी से मिले थे। द्वितीय महायुद्ध मित्र राष्ट्रों के लिए उस समय संकट पैदा कर रहा था। उस समय गांधी जी ने क्रिप्स से विनोद में कहा था–'स्वराज्य का मसौदा तो डूबते बैंक के नाम अग्रिम तारीख के चैक समान (अर्थात् निरर्थक) है ।'

इस बार क्रिप्स मिशन ठोस प्रस्ताव लेकर जिस समय दिल्ली पहुँचा, उस समय गांधी जी पुणे के निकट प्राकृतिक स्वास्थ्य सदन उरूलीकांचन में विश्राम कर रहे थे। सर क्रिप्स उनसे शीघ्र ही मिलना चाहते थे । उन्होंने सुधीर घोष को, जो उनके और गांधी जी दोनों के विश्वासपात्र थे, उरूलीकांचन भेजा। गांधी जी ने बहुत तर्क–वितर्क के पश्चात् सर क्रिप्स से मिलने का निश्चय किया।

उरूलीकांचन से गांधी जी अपने 13 साथियों के साथ तीसरे दर्जे के एक डिब्बे की स्पेशल ट्रेन से दिल्ली रवाना हुए। स्पेशल ट्रेन का प्रबंध सरकार ने ही किया था। गाड़ी प्रायः हर स्टेशन पर ठहरा ली जाती थी क्योंकि जनता को ज्ञात हो गया था कि गांधी जी स्पेशल ट्रेन से दिल्ली जा रहे हैं। वह उनके दर्शनों के लिए बहुत बड़ी संख्या में स्टेशनों पर पहुँचती थी और स्टेशन मास्टर को गाड़ी ठहराने को मजबूर करती थी। गांधी जी भी जनता की इच्छा का ध्यान रखते थे। इसीलिए दिल्ली समय पर नहीं पहुँच पाए। उनकी स्पेशल ट्रेन भी क्या थी? एक तीसरे दर्जे का डिब्बा और इंजन बस। चाल भी उसकी तेज नहीं थी । गांधी जी सदा की भाँति हरिजन बस्ती में ठहरे।

पैथिक लारेंस ने, जो मिशन के दूसरे

सदस्य थे, संदेश भेजा कि मैं 7 बजे संध्या को आपसे मिलने आ रहा हूँ। गांधी जी ने शिष्टतावश स्वयं ही वायसराय की कोठी पर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की ।

इसी बीच गांधी जी को स्मरण हुआ– ''अरे रेल का किराया तो हमने चुकाया ही नहीं।'' उन्होंने सुधीर घोष को तुरंत बुलाकर कहा–'' जोड़ो तो तीसरे दर्जे का 13 आदमियों का कितना किराया होता है।''सुधीर ने जोड़कर कहा–''बापू तीन सौ पचपन रुपये और छह आने होते हैं।''

''तो लोक वायसराय के सेक्रेटरी को यह किराया दे आओ।'' सुधीर गए और वायसराय के सेक्रेटरी से खासकर कहा कि यह स्पेशल ट्रेन की यात्रा का किराया गांधी जी ने भेजा है। सेक्रेटरी ने मुस्कुराते हुए कहा, –''क्या मैं स्टेशन मास्टर हूँ, जो किराया लूँ ? अरे, इसकी जरूरत क्या है? सरकार ने ही तो उन्हें बुलाया है। नहीं–नहीं, किराया वगैरह कुछ नहीं।'' सुधीर ने कहा, ''साहब, बूढ़े बापू नहीं मानेंगे, बड़े जिद्दी हैं।'' सेक्रेटरी ने रेल्वे बोर्ड से उसी समय पूछकर कहा, ''स्पेशल ट्रेन का किराया अट्ठारह हजार रुपया है। अपने बापू से कहो कि चुकाएँ।''

सुधीर असमंजस में पड़ गए। गांधी जी के पास गए और उन्हें सेक्रेटरी की माँग के संबंध में विस्तार से अवगत कराया। गांधी जी ने कहा, ''सेक्रेटरी से जाकर कहिए कि उनका हिसाब गलत है । सामान्य तौर पर मैं तीसरे दर्जे में यात्रा करता हूँ । इसलिए मैं तीसरे दर्जे का किराया दूँगा। "वायसराय के सेक्रेटरी को गांधी जी के तर्क के आगे झुकना पड़ा और तीसरे दर्जे का किराया लेकर संतोष करना पड़ा। गांधी जी यह मानते थे कि मैं जनता के द्रव्य पर जी रहा हूँ। इसलिए मुझे सँभाल कर उसे खर्च करना चाहिए।

दिल्ली में रहकर गांधी जी और सर क्रिप्स तथा पैथिक लारेंस में बीच–बीच में परामर्श होता रहा था। मिशन ने दिल्ली में देश के कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाकर यह जानना चाहा कि किस प्रकार के संविधान से सभी लोग संतुष्ट हो सकेंगे। मिशन दो उद्देश्यों को लेकर आया था। एक था संविधान के रूप का निर्णय और दूसरा सत्ता सौंपने के पूर्व एक अंतरिम केन्द्रीय सरकार की स्थापना का प्रयत्न।

मिशन ने इन्हीं दो बातों के संबंध में शिमला में मुस्लिम लीग और काँग्रेस के प्रतिनिधियों से विचार–विनिमय के लिए सभा आमंत्रित की थी। गांधी जी को दिल्ली में आभास हो गया था कि उनकी स्वराज्य की कल्पना के अनुरूप कार्य नहीं हो रहा है। इसलिए वे शिमला नहीं जाना चाहते थे। यहाँ यह स्मरण रहना चाहिए कि गांधी जी काँग्रेस के साधारण सदस्य भी नहीं थे। फिर भी वे उसके सर्वस्व थे, पर वे प्रजातंत्र में विश्वास करते थे। इसलिए अपने सहयोगियों को स्वतंत्रता देते थे। उन्होंने दिल्ली और शिमला में होने वाली कमेटियों की बैठकों में भाग नहीं लिया। क्रिप्स के बहुत आग्रह करने पर वे शिमला गए। क्रिप्स और उनके साथी गांधी जी से मिलते थे। गांधी जी को उनकी और भारतीय नेताओं की चर्चा से संतोष नहीं हुआ। वे दिल्ली लौट आए और अपने उन स्वाधीनता सेनानियों को जेल से मुक्त कराने का प्रयत्न करने लगे, जो वर्षों से बिना मुकदमा चलाए अनिश्चित काल के लिए जेल में ठूँस दिए गए थे।

गांधी जी ने सर क्रिप्स और पैथिक लारेंस से आग्रह किया कि आप राजनैतिक बंदियों की रिहाई के साथ गरीबों पर लगने वाले नमक कर से भी छूट दिला दें। सर क्रिप्स ने वायसराय द्वारा गांधी जी का पहला काम तो पूरा कर दिया। राजनैतिक बंदी छोड़ दिए गए परन्तु नमक कर की छूट नहीं करा सके। सम्भवतः उन्होंने उसे अधिक महत्व की बात नहीं समझी।

क्रिप्स मिशन के इंग्लैंड लौट जाने पर गांधी जी ने वायसराय से बार–बार नमक कर हटा देने का आग्रह किया। पर वह राजी नहीं

हुआ । इस कर को गांधी जी ने केन्द्र में अस्थायी सरकार बनने पर रद्द करवा दिया।

क्रिप्स मिशन जब तक भारत में रहा, तब तक उसने गांधी जी से संपर्क बनाए रखा। गांधी जी किसी भी रूप में देश का विभाजन नहीं चाहते थे। परन्तु मुस्लिम लीग विभाजन पर तुली हुई थी । गांधी जी ने लीग के सर्वेसर्वा जिन्ना से कई बार भेंट की और उनसे एक बार तो यह भी कहा कि तुम चाहो तो मेरे शरीर के दो टुकड़े कर डालो, परन्तु देश के दो टुकड़े न करो; परन्तु गांधी जी की भावना का जिन्ना पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने पाकिस्तान प्राप्त करने के लिए सीधी कार्यवाही की धमकी भी दी। उसके अनुसार लीग के अनुयायियों ने कार्य भी प्रारंभ कर दिया। वायसराय ने नेताओं के समझौते के बाद केन्द्र में अंतरिम सरकार स्थापित कर दी थी । मुस्लिम बहुल प्रांतों में लीगी मंत्रिमंडल और शेष प्रांतों में काँग्रेसी मंत्रिमंडल स्थापित हो चुके थे ।

लीग की सीधी कार्यवाही के प्रस्ताव का यह परिणाम हुआ कि कोलकाता और पूर्वी बंगाल में भयंकर साम्प्रदायिक दंगे हुए। बाद में बिहार में जवाबी साम्प्रदायिक दंगों से जन–धन की बड़ी हानि हुई। कोलकाता और पूर्वी बंगाल में हत्याकांडों को गवर्नर नहीं रोक सका। गांधी जी को कोलकाता और पूर्वी बंगाल से निरपराध स्त्री–बच्चों की हत्या, लूट, अग्निकांड आदि के जब समाचार मिले तो वे अपने को रोक नहीं सके । केन्द्रीय सरकार की अनिच्छा की परवाह न कर वे कोलकाता गए और वहाँ हिन्दू और मुसलमानों को शांति और प्रेम का उपदेश दिया। फिर बंगाल के नोआखाली और अन्य स्थानों में गए, जहाँ अमानुषिक अत्याचारों से अल्पसंख्यक जनता बर्बाद हो चुकी थी और भय से आकुल हो रही थी। उन्होंने कई गाँवों का दौरा किया उनके साथ उनकी नातिन और दो व्यक्ति भी थे। वे पैदल यात्रा करते थे, कभी–कभी नंगे पैर भी चलते थे। प्रत्येक गाँव में एक–दो रोज़ ठहरते और हिन्दू– मुसलमान को प्रेम से रहने का उपदेश देते थे। उनकी सभा में मुसलमान भी बड़ी संख्या में आते थे। उन्होंने पूर्वी बंगाल से लौटकर बिहार दंगा पीड़ितों को राहत पहुँचाने का काम किया।

एकला चलो रे

पूर्वी बंगाल के गाँवों में गांधी जी हिन्दू–मुसलमानों को प्रेम और भाईचारे की जिंदगी बिताने का जो उपदेश दे रहे थे, उसको प्रांतीय सरकार पसंद नहीं कर रही थी, क्योंकि उनकी सद्भावना यात्रा से सरकार की विफलता की ओर संसार का ध्यान खिंचता था। केन्द्र से भी उनको सहायता नहीं मिल रही थी। वे भयंकर तूफान में अकेले ही खड़े थे। केवल

दृढ़ निश्चय उनके साथ था। रवीन्द्र की आवाज़ उनके कानों में गूँज रही थी–'यदि तुम्हारी पुकार कोई नहीं सुनता तो क्या चिंता है, तुम अपने गंतव्य की ओर अकेले बढ़े चलो, बढ़े चलो, घबराओ मत। अरे, एकला चलो रे, एकला चलो।'

ब्रिटिश सरकार के प्रधान मंत्री लॉर्ड एटली भारत को स्वाधीन करने का विचार कर चुके थे। अतः उन्होंने पार्लियामेंट में घोषित कर दिया कि अँग्रेज जून 1948 में भारत छोड़ देंगे। इसके बाद उन्होंने भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल को इंग्लैंड वापस बुला लिया और उनके स्थान पर लॉर्ड माउंट बेटन को भारत का वायसराय बनाकर भेज दिया। लॉर्ड माउंट बेटन चतुर राजनीतिज्ञ, मधुर भाषी और गांधी जी के प्रति सम्मान रखने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने आते ही मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना और कॉंग्रेसजनों से बातचीत करना शुरू कर दिया। जिन्ना पाकिस्तान की बात पर दृढ़ रहे। कॉंग्रेस ने देश को पराधीनता से मुक्त करने की दृष्टि से विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। परिस्थितियों के चक्र के कारण अँग्रेजों को भारत छोड़ने की निश्चित तिथि से एक वर्ष पूर्व ही 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्र कर देश छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। गांधी जी कॉंग्रेस नेताओं के मत से सहमत नहीं थे, क्योंकि वे देश के विभाजन से हिन्दू और मुस्लिम दोनों की भलाई नहीं देखते थे। परन्तु जब देश का विभाजन अनिवार्य हो गया, तब दुखी मन से इसे नियति का विधान मान वे मौन हो गए। उत्तर पश्चिम प्रांत, सिंध, बलूचिस्तान और पंजाब का पश्चिमी भाग और बंगाल का पूर्वी भाग कटकर पाकिस्तान बना और शेष भाग भारत के नाम से घोषित हो गया।

गांधी जी का हृदय देश के दो टुकड़े हो जाने के कारण भीतर–ही–भीतर रो रहा था। जब 14 अगस्त की संध्या को भारत की जनता 15 अगस्त 1947 के स्वातंत्र्य सूर्य के उदय की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी, तब महात्मा गांधी कोलकाता की हिन्दू–मुस्लिम भाइयों के रक्त से रँगी हुई सड़कों तथा गलियों में एक मुसलमान के मकान में चरखा चलाकर सूत कात रहे थे और दोनों जातियों के लोगों को प्रेम से रहने का उपदेश दे रहे थे।

स्वराज्य की रात

14 अगस्त, 1947 की आधी रात; ठीक 12 बजे घंटे बज रहे थे, शंखध्वनि हो रही थी, संसद सदन के केन्द्रीय कक्ष में बाबू राजेन्द्र प्रसाद के सभापतित्व में संविधान सभा की एक विशेष बैठक ब्रिटिश शासन से सत्ता ग्रहण करने का समारोह मनाने को हो रही थी। जनता में हर्ष, उमंग की हिलोरें उठ रहीं थीं। सभा भवन दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने सत्ता स्वीकारते हुए महत्वपूर्ण भाषण दिया था। रह–रह कर करतल ध्वनि से हॉल गूँज उठता था, पर संसद में बैठे हुए स्त्री–पुरुषों की आँखें महात्मा के दर्शन के लिए व्याकुल हो रहीं थीं, जिसके त्याग और तपस्या के बल से भारत स्वाधीन हो रहा था; वहाँ वह नहीं था। वह था कोलकाता के एक मुस्लिम परिवार के घर में, जिसके बाहर की गलियाँ और सड़कें हिन्दू–मुसलमान भाइयों के रक्त से रँगी हुईं थीं। वह दोनों

भाइयों को प्रेम का संदेश देने गया था। वह भारत की अखंडता का पुजारी, खंडित भारत के स्वराज्य समारोह का दृश्य नहीं देखना चाहता था, नहीं देख सकता था। जब अँग्रेज पत्रकारों ने उनसे संदेश माँगा तो उन्होंने सिर्फ इतना कहा–''मुझे कुछ नहीं कहना।''

जिन क्षणों में सारा देश स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था, उन क्षणों में भारत का निर्माता, मानवता का अनन्य पुजारी, दीनहीनों का संरक्षक, शांति और प्रेम का देवता नोआखाली के रक्त रंजित, धूलमय मार्गों और पगडंडियों पर हिन्दुओं और मुसलमानों को पारस्परिक प्रेम और सहानुभूति का पावन संदेश देता हुआ घूम रहा था। भारत और पाकिस्तान में स्वतंत्रता के कार्यों पर दोनों राष्ट्रों के नेताओं के हस्ताक्षर की स्याही सूख भी नहीं पाई थी कि दोनों राष्ट्रों के शहरों और ग्रामों की सड़कें तथा बस्तियाँ भाई–भाई के रक्त से गीली होने लगीं। ऐसी स्थिति देखकर महात्मा जी ने बड़े दुःख के साथ कहा था, ''मैं भाई–भाई के आपस में कट मरने का दृश्य देखने को जिंदा नहीं रहना चाहता।'' उन्होंने पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब में भी जाना चाहा था, परन्तु दिल्ली में ही नरसंहार, लूट आदि के भयानक कांड हो रहे थे, इसलिए वहाँ भी गांधी जी की आवश्यकता थी। वे वहीं बिरला भवन में ठहर गए और प्रतिदिन संध्या को प्रार्थना सभा में अहिंसा, प्रेम और एकता आदि पर प्रवचन करने लगे। जनता की हिंसक प्रवृत्ति को शांत करने के लिए उन्होंने 13 जनवरी 1948 को उपवास भी प्रारंभ कर दिया और यह घोषित किया कि जब तक हिन्दू, मुसलमान, सिख आदि जातियाँ लड़ना बंद नहीं करेंगी, मेरा उपवास जारी रहेगा। उसका परिणाम यह हुआ कि पाँच दिन के भीतर ही सब संप्रदायों के नेताओं ने उन्हें विश्वास दिलाया कि हम शांति से रहेंगे, प्रेम से रहेंगे। अतः उन्होंने उपवास त्याग दिया और नित्य की भाँति प्रार्थना सभा में प्रवचन जारी रखा।

महाप्रयाण

1948 की जनवरी की 30 तारीख थी; शुक्रवार का दिन था । संध्या रात की ओर बढ़ रही थी। घड़ी ने पाँच बजा दिए थे। बिरला हाउस के प्रांगण में जनता की भीड़ महात्मा गांधी के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। उनका प्रार्थना सभा में आगमन का समय हो रहा था।

"बापू को आज क्या हो गया? वे तो कभी लेट नहीं होते थे''–लोग आपस में फुसफुसा रहे थे। "जरा अपनी घड़ी को देखो, कहीं वही तो गड़बड़ नहीं है"–कुछ लोग सावधान होकर बोल रहे थे। पाँच बजकर बारह मिनट हुए।

लोगों ने देखा महात्मा जी लॉन में दो लड़कियों – आभा और मनु के कंधों पर हाथ धरे जल्दी–जल्दी चले आ रहे थे। कंधे पर खादी की शाल ओढ़े हुए थे, दिल्ली में कँपाने वाली सर्दी जो बरस रही थी। वे प्रार्थना सभा के स्थान पर आए। जनता उनके निकट जल्दी–जल्दी बढ़ने लगी । वे हाथ जोड़े मंच पर मुश्किल से पाँच ही सीढ़ी चढ़े होंगे कि एक आदमी भीड़ में से लपका और उसने चरण छूने की मुद्रा में झुक छाती पर पिस्तौल तान दी और लगातार तीन फायर किए। महात्मा जी के मुख से केवल 'हे राम' निकला और वे बेहोश होकर धरती पर गिर गए। जनता में खलबली मच गई। हत्यारा पकड़ लिया गया। जनता उस पर बुरी तरह टूट रही थी, पर पुलिस उसे खींचकर शीघ्र मैदान से बाहर ले गई । गांधी जी को बिरला हाउस में ले जाया गया। बिरला

हाउस को जनता की असंख्य भीड़ ने घेर लिया। नेता गांधी जी के शव के पास शोक मुद्रा में बैठे रहे । 'रघुपति राघव राजाराम की धुन गूँजती रही।'

आकाशवाणी ने उनकी हत्या का समाचार संसार भर में प्रसारित कर दिया। पं. जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्र के नाम रुँधी हुई आवाज़ में संदेश देते हुए कहा –

''हमारे जीवन की रोशनी बुझ गई, चारों तरफ अँधेरा छा गया है।'' फिर जरा सँभलकर वे बोले – ''मैंने अभी कहा कि रोशनी बुझ गई है, यह ठीक नहीं है । जिस रोशनी से देश जगमगा रहा था, वह मामूली रोशनी नहीं थी। वह कभी नहीं बुझ सकती।''

दिल्ली में यमुना नदी के किनारे महात्मा जी का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया, परन्तु वे अपने यश रूपी शरीर से युग–युग तक जीवित रहेंगे और संसार को अपने ज्ञान प्रकाश से ज्योतित करते रहेंगे ।

'असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्माऽमृतं गमय ।।'

अभ्यास

1. गोखले जी ने गांधी जी को देश भ्रमण की सलाह क्यों दी ?
2. सत्याग्रह आश्रमवासियों को किन नियमों का पालन करना पड़ता था ?
3. सत्याग्रह आश्रम में हरिजन परिवार के आ जाने पर गांधी जी के सामने कौन–सी समस्याएँ आईं ?
4. महात्मा गांधी जी का वाराणसी (बनारस) विश्वविद्यालय में दिया गया भाषण क्रांतिकारी क्यों कहा गया ?
5. गांधी जी ने असहयोग आंदोलन क्यों चलाया? उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए– कौन–कौन से तरीके अपनाए गए ?
6. बारडोली सत्याग्रह क्या था ? इसका क्या परिणाम निकला?
7. नमक कर तोड़ने के लिए गांधी जी ने क्या किया ?
8. गांधी जी बुनियादी शिक्षा के पक्षपाती क्यों थे ?
9. गांधी जी की आदर्श ग्राम की कल्पना क्या थी?
10. किन परिस्थितियों के कारण गांधी जी को 'भारत छोड़ो आंदोलन' प्रारंभ करना पड़ा ? उसका क्या परिणाम हुआ ?
11. गांधीजी ने देश भ्रमण करते हुए क्या–क्या अनुभव किए ?
12. संक्षिप्त टिप्पणी लिखो –
    साबरमती आश्रम, जलियाँवाला बाग का हत्याकांड, गोलमेज परिषद्, क्रिप्स मिशन, रोलेट एक्ट।
13. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो –

(क) 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे प्राप्त करके ही रहूँगा।' यह कथन श्री ..... का था ।

(ख) शांति निकेतन की स्थापना ..... ने की थी ।

(ग) महात्मा गांधी के निजी सचिव श्री ..... थे ।

(घ) भारत छोड़ो आंदोलन सन् ..... में प्रारंभ हुआ था ।

(ड.) जब देश स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था तब ..... हिन्दुओं और मुसलमानों को प्रेम का संदेश देते घूम रहे थे ।